SACHCHA RAHI • ISSN 2582-4007 • VOL 22 • ISSUE 10 • DECEMBER 2023

हिन्दी मासिक

दिसम्बर 2023

सच्चा राही

लखनऊ

सामाजिक एवं साहित्यिक

सुब्हे क़यामत

आज फिर मध्य पूर्व एक नये तूफ़ान की लपेट में है, यह सैलाब यहूदियत का है जो अतीत के तातारी फ़ितने की मिसाल, बल्कि उससे अधिक तीव्र है, वर्तमान और अतीत के इन दो फ़ितनों में अगर कोई अन्तर है तो केवल इतना कि तातारी फ़ितना अपने वजूद में स्थाई था और वर्तमान का यहूदी फ़ितना साम्राजी देशों का एक बहरूप है, चेहरा देखिए तो इस्राईल ..... लेकिन उसके दिल व दिमाग़ और शरीर का अंग-अंग और उनकी इच्छाएं सब साम्राजी ताक़तों की हैं।

(इदारा)

एक प्रति ₹ 30/=

वार्षिक ₹ 300/=

सरपरस्त
हज़रत मौलाना सै0 बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी
नाज़िम नदवतुल उलमा, लखनऊ

सम्पादक
मु0 गुफ़रान नदवी
उप सम्पादक
जमाल अहमद नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
☎ 0522–2740406 (8:00 am to 1:00 pm)
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com
http://sachcha-rahi.nadwa.in/
www.nadwatululema.org

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक)	50 युएस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
SACCHA RAHI

SACCHA RAHI
A/c. No. 10863759642
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई–मेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ
SACHCHA RAHI.ISSN 2582-4007

दिसम्बर 2023 वर्ष 22 अंक 10

''तारिक़ की दुआ''

ये ग़ाज़ी ये तेरे पुर अस्रार बन्दे
जिन्हें तूने बख़्शा है ज़ौक़े ख़ुदाई
दो नीम, उनकी ठोकर से सहरा–व–दरया
सिमट कर पहाड़ उनकी हैबत से राई
दो आलम से करती है बेगाना दिल को
अ़जब चीज़ है लज़्ज़ते आशनाई
शहादत है मतलूब व मक़सूद मोमिन
न माले ग़नीमत, न किश्वर कुशाई
अ़ज़ाएम को सीनों में बेदार कर दे
निगाहे मुसलमाँ को तलवार कर दे।
(अल्लामा इक़बाल रह0)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक मोहम्मद ताहा अतहर द्वारा काकोरी आफसेट प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Composing by: Qamaruzzama-8318047804

विषय एक दृष्टि में

कुरआन की शिक्षा	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0	07
लमहों ने ख़ता की	मुहम्मद गुफ़रान नदवी	08
जलता है मगर शाम–ओ–फ़लस्तीं	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	10
ग़ाजा इस्राइल जंग–मुजरिम कौन?	मौलाना जाफर मसऊद हसनी नदवी	12
मज़लूम जियाले	शाद अब्बासी	13
इस्लामी कल्याणकारी व्यवस्थाएं	मौलाना सैयद जलालुद्दीन उमरी	14
फ़िलिस्तीनी विवाद और इस्राइली	हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी रह0	17
भारत के अतीत में मुस्लिम	सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान	19
इस्लाम आतंक नहीं अनुसरणीय	स्वामी लक्ष्मीशंकराचार्य	22
हम ज़िन्दा हैं और आप मर चुके हैं	इं0 जावेद अकबाल	24
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी	28
रूह की गहराईयों में दर्द का एहसास	मौलाना शब्बीर अहमद जज़्बी कांधेलवी	29
कामयाब ज़िन्दगियाँ	शमीम इक़बाल खाँ	30
घरेलू मसायल	मौलाना मुहम्मद बुरहानुद्दीन संभली रह0	32
शिक्षा और मानसिक स्वास्थ्य	अबु मु0 आमिर नदवी	34
जुल्म का अंजाम	अब्दुल रशीद सिद्दीक़ी नसीराबादी	35
नदवतुल उलमा में तीन दिवसीय	इदारा	36
युद्ध समस्या का समाधान नहीं	नौशाद खान	37
स्वास्थ्य	डॉ0 लोकेश के0 भारती	39
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	अबू मोहम्मद आमिर नदवी	41
अहले ख़ैर हज़रात की खिदमत में	इदारा	42

क़ुरआन की शिक्षा

मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़ई हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-हूदः-

अनुवादः—

क़यामत के दिन वह अपनी क़ौम के आगे—आगे होगा फिर उनको आग पर पहुँचा देगा और यह बहुत बुरा घाट है जहाँ कोई पहुँचे(98) और यहाँ (दुनिया में) भी फिटकार ने उनका पीछा किया और क़यामत के दिन भी, यह बहुत बुरा बदला है जो किसी को दिया जाए(99) यह बस्तियों की कुछ घटनाएं हैं, जो हम आपको सुना रहे हैं, कुछ उनमें बाक़ी हैं और कुछ मलियामेट हो चुकीं[1](100) हमने उन पर अत्याचार नहीं किया मगर खुद उन्होंने अपने ऊपर अत्याचार किया, फिर जब अपने पालनहार का आदेश आ गया तो उनके वे पूज्य (माबूद) जिनको वे अल्लाह को छोड़ कर पुकारते थे उनके कुछ भी काम न आ सके और बर्बाद करने के सिवा उन्होंने उनको, कुछ भी न दिया(101) और उनके पालनहार की पकड़ ही ऐसी है, जब भी उसने किसी बस्ती की पकड़ की जब कि वह अत्याचारी थी बेशक उसकी पकड़ बड़ी दुखदायी है बड़ी कठोर है(102) बेशक इसमें उसके लिए एक निशानी है जो आखिरत के अज़ाब का डर रखता हो, वह ऐसा दिन है कि उसमें सब लोग इकट्ठा किये जाएंगे और वह पेशी का दिन है(103) और हम उसको केवल एक गिनी—चुनी अवधि तक टाल रहे हैं(104) जिस दिन वह आ जाएगा तो कोई व्यक्ति उसकी अनुमति के बिना बोल न सकेगा तो उनमें कोई अभागा होगा और कोई भाग्यशाली(105) फिर जो अभागे हैं वे आग में होंगे और दहाड़ें मारते रहेंगे(106) उसी में हमेशा रहेंगे जब तक आसमान और ज़मीन क़ायम हैं सिवाय उसके जिसको आपका पालनहार चाहे बेशक आपका पालनहार जो चाहता है कर ही डालता है(107) और जो भाग्यशाली हैं तो वे जन्नत में होंगे उसी में हमेशा रहेंगे जब तक आसमान व ज़मीन क़ायम हैं सिवाए उसके जिसको आपका पालनहार चाहे, न समाप्त होने वाली देन (बख्शिश) है[2](108) तो यह लोग जिसकी पूजा कर रहे हैं आप उसके बारे में धोखे में न रहें, जैसे पहले उनके बाप—दादा पूजा करते रहे हैं उसी तरह यह भी पूजा कर रहे हैं, हम बिना कमी किये उनको उनका पूरा हिस्सा दे देंगे[3](109) और हमने मूसा को किताब दी तो उसमें भी मतभेद हुआ और अगर पहले से आपके पालनहार की ओर से कोई बात निर्धारित न होती तो उनका फैसला ही हो जाता और वे उसके बारे में ऐसे संदेह में पड़े हुए हैं कि उनके दिल ठहरते ही नहीं(110) और जितने भी लोग हैं उनको आपका पालनहार उनके कामों का पूरा पूरा बदला दे कर रहेगा, उसको उनके सारे कामों की पूरी जानकारी है[4](111) तो आप उसी तरह जमे रहें जैसे आपको कहा गया और आपके साथ वे भी जिन्होंने तौबा की, और तुम लोग हद से न बढ़ना बेशक तुम जो भी करते हो उस पर उसकी पूरी नज़र है(112) और अत्याचारियों की ओर तुम्हारा झुकाव भी न हो वरना आग तुम्हें भी पकड़ लेगी फिर अल्लाह के अलावा तुम्हारे समर्थक न होंगे

फिर तुम्हारी सहायता भी न की जाएगी[5](113) और दिन के दोनों छोर में और रात के विभिन्न भागों में नमाज़ क़ायम कीजिए बेशक नेकियाँ बुराइयों को मिटा देती हैं, यह नसीहत है याद रखने वालों के लिए(114) और जमे रहिए बेशक अल्लाह बेहतर काम करने वालों के बदले को बर्बाद नहीं करता(115) तो क्यों न आपसे पहले क़ौमों में शऊर वाले लोग हुए कि वे ज़मीन में बिगाड़ से मना करते सिवाय कुछ लोगों के जिनको हमने उनसे बचा कर रखा और अत्याचारियों को जिस देश में डाल दिया गया वे उसी चक्कर में लगे रहे और वे थे ही अपराधी लोग[6](116) और आपका पालनहार ऐसा नहीं कि ज़बरदस्ती किसी बस्ती को तबाह कर दे जबकि वहाँ के लोग सुधार में लगे हों(117)।

तफ़्सीर (व्याख्या):–

1. कुछ बाक़ी हैं जैसे मिस्र आदि, कुछ के खण्डहर हैं जैसे हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम का मदयन आदि और कुछ मलियामेट हो चुकीं जैसे हज़रत लूत अलैहिस्सलाम की बस्तियाँ।

2. "मादामतिस्समावातु वल अर्ज़" का मतलब दूसरे आसमान व ज़मीन हैं जो हमेशा रहेंगे जिसका उल्लेख इस आयत में है "यौम तुबद्दलुल अर्ज़ु ग़ैरल अर्ज़ि वस्समावात" जब इस ज़मीन और आसमानों की जगह दूसरे ज़मीन व आसमान ले लेंगे और यह अरबी भाषा की एक अभिव्यक्त शैली है जो उस समय प्रयोग में आती है जब कि किसी चीज़ के बारे में बताना हो कि वह चीज़ हमेशा रहेगी, "इल्ला माशअ़ रब्बुक" कह कर साफ़ हो गया कि सब कुछ उसके अधिकार से होगा, और अभागों के लिए आगे "फअ़्आलुल्लिमा युरीद" कह कर इशारा है कि बहुत से गुनहगार अपनी सज़ा भुगत कर उसमें से निकाले जाएंगे, और भाग्यशाली लोगों के बारे में "अताउन गैरुमज़्जूज़" कह कर स्पष्ट कर दिया कि जन्नत में प्रवेश कर के कोई निकाला नहीं जाएगा।

3. यानी इतनी बड़ी जनसंख्या का शिर्क व मूर्तिपूजा के रास्ते पर पड़ जाना और अब तक सज़ा न पाना कोई ऐसी चीज़ नहीं कि जिससे धोखा खा कर आदमी संदेह में पड़ जाए, लोग अंधे–बहरे हो कर अपने बाप–दादा के रास्ते पर चल रहे हैं, उन सब को जितना अज़ाब उनके भाग्य में लिखा है मिल कर रहेगा, उसमें कुछ कमी न होगी।

4. तौरेत के आने के बाद भी बहुत से लोगों ने माना और बहुत लोगों ने न माना, अल्लाह चाहता तो उसी समय इनकार करने वाले तबाह कर दिये जाते लेकिन अल्लाह ने दुनिया को परीक्षा स्थल बनाया है, उसकी वास्तविकता मरने के बाद ही सामने आएगी, जो भी अच्छे–बुरे काम कर रहा है उसका पूरा–पूरा बदला मिल जाएगा।

5. आप और आपके साथ ईमान लाने वाले खुद जमे रहें और हर चीज़ में संतुलन बनाए रखें और सीमा लांघने वालों की ओर ज़रा भी झुकाव न हो और न उनसे किसी तरह की समानता अपनाई जाए वरना खुद उसी में पड़ जाने और उसके परिणाम स्वरूप आग का शिकार होने का खतरा है, पर आगे नमाज़ क़ायम करने का आदेश है और यह नियम बनाया गया है कि नेकियाँ बुराइयों को मिटाती चलती हैं, नमाज़ की प्रतिबद्धता बुराइयों से दूर करती है।

6. यह ताक़ीद है इस उम्मत को कि हर ज़माने में इसमें ऐसे सुधारक व धर्म प्रचार करने वाले रहने वाले चाहिए जो उम्मत को सही रास्ते की ओर बुलाते रहें।

❖❖❖

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौ0 हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0

रिश्तों और नातों को जोड़े रखने का बयान

घर वालों पर खर्च करने का बदला सबसे ज़्यादा है:–

हज़रत अबू हुरैराः रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया तुम अल्लाह के रास्ते में दीनार खर्च करते हो, किसी गुलाम को आज़ाद करने में रूपये खर्च करते हो, किसी गरीब पर रूपये खर्च करते हो और अपने बाल–बच्चों पर ख़र्च करते हो, उनमें सबसे ज़्यादा अज्र तुम को उस पर मिलेगा जो तुम अपने बाल–बच्चों पर खर्च करते हो।

(बुखारी व मुस्लिम)

बेहतरीन दीनार (रूपये):–

अल्लाह के रसूल सल्ल0 के आज़ाद किये हुए गुलाम हज़रत सौबान रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया बेहतरीन दीनार वह है जिसको आदमी अपने घर वालों पर खर्च करे, और उन जानवरों पर ख़र्च किये जायें जो अल्लाह के रास्ते में काम आते हैं, और वह दीनार जो अल्लाह के रास्ते में अपने साथियों पर खर्च किये जाएं। (मुस्लिम)

अपने मातहत और स्वजन की मदद न करना बड़ा गुनाह है:–

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल–आस रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल ने फरमायाः इन्सान के गुनाह के लिए यही काफी है कि वह जिसके भरण–पोषण का ज़िम्मेदार है उसकी ज़िम्मेदारी से हाथ उठा ले। (अबू दाऊद)

घर वालों की चिंता पहले:–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमायाः तुम लोग सदका करो, एक आदमी ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे पास एक ही दीनार है, आप सल्ल0 ने फरमाया उसको अपने ही ऊपर सदका कर लो, फिर उसने कहा मेरे पास दूसरा भी है, आप सल्ल0 ने फरमाया उसको अपनी बीवी पर सदक़ा कर दो, फिर उसने कहा मेरे पास एक और भी है, तो आप सल्ल0 ने फरमाया उसको अपने लड़के पर सदक़ा कर दो, फिर उसने कहा मेरे पास एक और भी है, आप सल्ल0 ने फरमाया उसको अपने खादिम पर सदक़ा कर दो, फिर उसने कहा मेरे पास और भी है, आप सल्ल0 ने फरमाया तुम अच्छी तरह समझते हो कि उसको कहाँ खर्च करना है। (अबू दाऊद व नसई)

हज़रत जाबिर रज़ि0 फरमाते हैं कि बनू अज़रः के एक आदमी ने अपने एक गुलाम को मुदब्बर बनाया (यह कहा कि मेरे मरने के बाद तुम आज़ाद हो) अल्लाह के रसूल सल्ल0 को मालूम हुआ तो आप सल्ल0 ने उस आदमी से पूछा तुम्हारे पास इसके अलावा भी कोई माल है? उसने कहा नहीं। आप सल्ल0 ने फरमाया इस गुलाम को मुझ से कौन खरीदता है? एक आदमी नईम बिन अब्दुल्लाह अदवी ने उसको आठ सौ दिर्हम में खरीद लिया, अल्लाह के रसूल सल्ल0 वह आठ सौ दिर्हम लेकर उस आदमी के पास गये, और उसको दे दिया फिर फरमाया अपने से शुरु करो और पहले अपने ऊपर सदक़ा करो, फिर अगर बचता है तो अपने बाल बच्चों पर सदक़ा करो, बाल बच्चों से भी बचता है तो अपने रिश्तेदारों पर खर्च करो, अगर रिश्तेदारों से भी बचता है तो फिर दिल खोल कर जो भी सामने आ जाए उसको दो।

(मुस्लिम)

हज़रत उमर बिन अल–खत्ताब रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 बनू नज़ीर के बाग का खुजूर बेच देते और घर वालों के लिए साल भर का खर्च रोक लेते।

(बुखारी)

❖❖❖

सम्पादकीय

लमहों ने ख़ता की, सदयों ने सज़ा पाई

मुहम्मद गुफ़रान नदवी

इस समय अन्तर्राष्ट्रीय मीडिया की सबसे पहली और बड़ी हेडिंग ''फिलिस्तीन की सरज़मीन पर हैवानियत और हिंसा अपनी चरम सीमा पर है''।

निरन्तर फ़िलिस्तीनी बाशिन्दे जुल्म और अत्याचार की चक्की में पिस रहे हैं संयुक्त राष्ट्र में फ़िलिस्तीनी प्रतिनिधि रियाज़ मनसूर ने पिछले दिनों बिलकते हुए ग़ाज़ा की सूरते हाल बयान की, उन्होंने बताया कि इस्राइल ने फ़िलिस्तीन के हज़ारों बच्चों और सैकड़ों महिलाओं को मौत की नींद सुला दिया है और अब भी ख़ौफ़नाक बंबारी ज़ारी है उन्होंने कहा ग़ाज़ा में पूरे–पूरे महल्ले तबाह हो गये हैं और खानदानों के ख़ानदान मल्यामेट कर दिये गये हैं और हज़ारों बच्चे मकानों के मलबे में दबे हुए हैं, उन्होंने यह भी कहा कि फ़िलिस्तीनियों के वापस जाने के लिए कोई घर नहीं बचा है। इस्राइल ने वहां 14 लाख से ज़्यादा लोगों को बे घर और बे दर कर दिया है, बहुत बड़ी संख्या में लोग मरे और ज़ख़मी हुए। ''सच्चा राही'' का यह अंक जिस समय आपके हाथ में पहुँचेगा उस समय तक यह ऐतिहासिक नरसंहार बहुत आगे जा चुका होगा और सारी सीमाओं को तोड़ चुका होगा क्योंकि इस्राइल और उसका संरक्षक एवं सहयोगी अमरीका ने चैलेंज दिया है कि यह चहुमुखी आक्रमण चलता रहेगा जब तक फ़िलिस्तीन बाक़ी रहेगा, इस्राइल ने अपने अत्याचार और क्रूरता पर परदा डालने के लिए इन्टरनेट और मोबाइल फोन की सेवाएं बन्द कर दी हैं ताकि बाहर की दुनिया को हमारे अत्याचार की ख़बर न हो और हम अपनी मनमानी करते रहें, पूरी दुनिया में इस्राइल के विरुद्ध लाखों इन्सानों ने सड़कों पर प्रदर्शन किया, संयुक्त राष्ट्र की महासभा में गाज़ा में संघर्ष विराम का प्रस्ताव पारित हुआ, एक सौ बीस देशों ने समर्थन किया, इस सबके बावजूद अमरीका और उसके सहयोगियों ने वीटो कर दिया जिसकी वजह से इस्राइल पूरी ढिठाई के साथ अपनी क्रूरता पर जमा हुआ है। इस्राइल के बारे में मशहूर है कि वह बहुत बुज़लिद, कायर क़ौम है वह इतना आगे नहीं बढ़ सकती थी, और हिम्मत नहीं कर सकती थी दुनिया जानती है कि उसकी पुश्त पर अमरीका जैसी बड़ी ताक़त है जो बराबर उसको प्रेरणा दे रहा है कि हम तुम्हारे साथ हैं, और बराबर खड़े हैं अमरीका के साथ साथ फ्रांस, इटली दूसरे योरीपीय देश, विशेष कर ब्रिटिश जिसने पहले दिन से इस्राईल को प्रोत्साहित किया और अरबों की ज़मीन पर ला कर उनको बसाया, अरबों ने उस अवसर पर जो मुरव्वत बरतीं उसी का परिणाम वह आज तक भुगत रहे हैं।

अरब इस्राइल घटना बहुत पुरानी है इसकी शुरुआत प्रथम विश्व युद्ध 28 जुलाई, 1914 ई0 से होती है, 11 नवम्बर, 1918 युद्ध की समाप्ति तक बैतुल मक़दिस, खिलाफ़ते उस्मानी की अधीनता और उसकी हिफ़ाज़त में रहा। 1918 ई0 में फ़िलिस्तीनियों को ब्रिटिश सेना के सामने हथियार डालने पर मजबूर होना पड़ा जिसके बाद ही ब्रिटिश ने वहां उच्चाधिकार प्राप्त किया और दूसरे देशों से यहूदियों को ला कर फ़िलिस्तीन

में आबदा किया, 1925 ई0 से 1938 ई0 तक फ़िलिस्तीन की राजधानी कुद्स में बहुत से यहूदी इदारे क़ायम हो गये, 1947 ई0 में संयुक्त राष्ट्र ने ब्रिटेन की प्रधानता को समाप्त करके फ़िलिस्तीन को यहूदी और अरबी दो भागों में विभाजित कर दिया और कुद्स को अन्तर्राष्ट्रीय शहर क़रार दिया, 1948 ई0 में अरब इस्राईल जंग शुरु हुई जो आज तक चल रही है और बराबर फ़िलिस्तीनियों के दायरे को तंग किया जा रहा है। जून 1967 ई0 में इस्राईल ने आक्रमण किया, कुद्स और मस्जिदे अक़्सा पर अपने क़ब्ज़े का ऐलान किया इस तरह पूरी ज़िन्दगी फ़िलिस्तीनियों को जंग में गुज़ारनी पड़ रही है। जून 1967 के बाद इस्राईल ने एक बड़ा हमला 8 जुलाई 1967 ई0 को किया जिसकी तबाहकारियाँ 27 अगस्त 1967 ई0 तक जारी रहीं उस हमले में भी ग़ाज़ा शहर को तबाह व वीरान किया गया, समाचार पत्रों की सूचना के अनुसार फ़िलिस्तीनियों के 400 बच्चों, 2500 मर्द औरतों को मौत के घाट उतार दिया गया था, आज 5 नवम्बर 2023 की तारीख है, 7 अक्तूबर 2023 से इस्राईल और हमास का जो संघर्ष चल रहा है वह दुनिया के सामने है उसके आँकड़ों को पढ़ा जा सकता है–

इस्राईली फ़ौज के वहशियाना हमलों से अब तक 9227 फ़िलिस्तीनियों की शहादत हुई है उनमें बड़ी संख्या बच्चों की है, जिनमें घायल होने वालों की संख्या 2300 से अधिक है। इस दुख़दायक और शोक पूर्ण दास्तान का जब हम जाएज़ा लेते हैं तो दूसरों से ज़्यादा अपनों से शिकायत है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया था कि पूरी मिल्लते इस्लामिया एक शरीर के समान है, यदि शरीर के किसी एक अंग में तकलीफ़ होती है तो पूरा शरीर उस तकलीफ़ को महसूस करता है, इस अवसर पर क़रीब और दूर की मुस्लिम हुकूमतें तमाशाई बनी, खड़ी रहीं किसी का हाथ फ़िलिस्तीनियों की मदद के लिए नहीं बढ़ा यहाँ तक कि फ़िलिस्तीन के पड़ोसी देश मिस्र, सीरिया, जारडन किसी ने भी अपनी ईमानी हरारत का कोई सुबूत नहीं दिया, इन देशों ने अपनी सीमाएं बन्द कर दीं ताकि किसी प्रकार की सहायता उन मज़लूमों को न पहुंच सके और वह तड़प तड़प कर मर जाएं, इन मुस्लिम शासकों ने अपने को अमरीका जैसी बड़ी ताक़तों के हाथों में गिरवी रख दिया है, उनकी आज्ञा के बिना वह कोई क़दम नहीं उठा सकते, पूरी दुनिया में इस्राईली बरबरता के विरुद्ध कोहराम मचा हुआ है, लाखों लोग सड़कों पर प्रदर्शन कर रहे हैं, परन्तु हमारे अरब शासकों के दिलों पर इसका कोई प्रभाव नहीं, निहत्थे फ़िलिस्तीनी अपने बलबूते पर अपने वतन की हिफ़ाज़त के लिए कुरबानी दे रहे हैं, जिनके दिलों में इन्सानियत का दर्द है वही उनका साथ दे रहे हैं, वास्तविकता यह है कि दुनिया में सच्चाई का बोलबाला है और होगा, इस समय फ़िलिस्तीनी जो कुरबानी दे रहे हैं तारीख में उसकी मिसाल बहुत कम मिलेगी, दुआ है कि अल्लाह तआला उनको साबित क़दम रखे, इनशाअल्लाह उनकी कुरबानियाँ रंग लाऐंगी अल्लाह तआला ने ईमान वाले बन्दों को बड़ी तसल्ली और ख़ुशख़बरी दी है, ''और कमज़ोर मत पड़ो और न दुखी हो, अगर तुम ईमान वाले हो तो तुम्ही छा कर रहोगे''। (सूरः आलेइमरान–139)

❖❖❖

क़यामत उनपे टूटे, बिजलियाँ तड़पें, लहू बरसे
ख़ुदा का हो ग़ज़ब नाज़िल, मज़ालिम ढाने वालों पर

जलता है मगर शाम-ओ-फलस्तीं पे मेरा दिल

मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी

दुनिया के परिदृश्य पर फ़िलिस्तीन का मसला उभर कर सामने आया है। अरबों की धरती पर 1917 में गुप्त रूप से यहूदियों ने क़दम जमाने शुरू किये थे। 1920 के बाद विधवत रूप से अंग्रेज़ों के संरक्षण में वहां यहूदियों के पुनर्वास का सिल्सिला शुरू हुआ। 1939 में उनकी तादाद 6 लाख के करीब पहुंच गई। 1948 में विधवत रूप से ''इस्राईल'' सरकार की स्थापना की घोषणा कर दी गई। और यहूदियों ने कई अरब राज्यों पर क़ब्ज़ा कर अपनी सरकार स्थापित कर ली। फ़िलिस्तीन की धरती पर एक ऐसा नासूर वजूद में आ गया जिसने न जाने कितने घरों को वीरान कर दिया और वही यहूदी जो ''अत्याचार'' का रोना रो रो कर वहाँ आबाद हुए थे, उन्हों ने जुल्म की वो सारी हदें पार कर लीं जिसका ज़िक्र भी रोंगटे खड़े कर देने के लिए काफ़ी है।

बड़ी खींच तान के बाद फ़िलिस्तीन की एक छोटी सी पट्टी (गज़्जा) मुसलमानों के हवाले कर दी गई। लोकतांत्रिक रूप से वहां इस्लामवादी दल को सत्ता मिली तो क़ानून व इंसाफ़ का नारा बुलंद करने वालों को एक आँख न भाई।

उसी अमेरिका को ये लोकतंत्र खटकता रहा जिसने इराक़, अफ़ग़ानिस्तान और न जाने दुनिया के कितने देशों में ''लोकतंत्र'' के नाम पर क्या कुछ न किया। इस्राइली सरकार खुद जिस तरह अंतर्राष्ट्रीय क़ानूम को पैरों तले रौंदती रही है इस पर किसी देश को विरोध की ज़रूरत नहीं और कोई करे भी तो कैसे करे ''सुपर पॉवर'' का संरक्षण उसको हासिल है।

फ़िलिस्तीन के उत्पीड़ित मुसलामानों ने अपना घर वापस लेने की कुछ कोशिश की तो दुनिया चीख़ पड़ी और फिर इस्राईल ने अपने सभी संसाधनों के साथ जिस तरह क़ानून की धज्जियाँ उड़ाईं वो इतिहास का एक काला अध्याय है। इस वक़्त न अस्पताल सुरक्षित हैं न स्कूल, कितने स्कूल इसलिए बंद हो गए कि वहाँ सब बच्चे शहीद कर दिए गए। क्या ये सम्भव था कि दुनिया में कहीं ये घटना घटती और दुनिया ख़ामोश रहती? लेकिन ये कोई नई बात नहीं है, ईसाई यूरोप का यही इतिहास है और नई दुनिया अमेरिका ने इस चलन को और ज़्यादा ''विकास'' के साथ अपनाया है और यूरोप उसका समर्थक है। इस तरह अमेरिका, इस्राइल और यूरोप एक ऐसा त्रिकोण तैयार हुआ है जो पूरी दुनिया को अपनी लपेट में ले लेना चाहता है, इनके यहां

नैतिकता और मानवीय मूल्यों की कोई क़ीमत नहीं। न इनको हीरोशिमा और नागासाकी पर बम बरसाने में कोई शर्म आई और न इराक़ व अफ़गानिस्तान की धरती को लहुलहान कर देने से उनके माथे पर बल आया और न इस वक़्त गज़्ज़ा की इंसानी आबादी पूरी तरह तबाह व बर्बाद करने में उनको कोई शर्म है। पूरी दुनिया की जनता घोर विरोध कर रही है, ख़ुद कुछ न्यायप्रिय यहूदी इसके खिलाफ आवाज उठा रहे हैं, बहुत से देशों ने कड़ा विरोध दर्ज कराया है और कुछ मानवतावादी देशों से देखा न गया तो उन्हों ने अपने तौर पर जो बन पड़ा वो किया लेकिन ''साहब'' की दादागीरी के आगे किसकी फ़रयाद सुनी जाएगी।

अफसोस है उन अरब देशों पर, जो अपने मामूली हितों की ख़ातिर जालिमों की चापलूसी में लगे हुए हैं और सब से बढ़ कर जो मुल्क इसके लिए आगे आता और इस्लामी जगत का नेतृत्व करता, उसने सारी हदें पार कर दीं, गज़्ज़ा में आग लगाई जा रही है, मासूम बच्चों और औरतों को ख़ूब मारा जा रहा है, जिस्मों के टुकड़े बिखरे पड़े हैं, लाशें बिना क़फ़न दफ़न के पड़ी हुई हैं, ऐसे में वहां नाच गाने की महफ़िलें सजाई जा रही हैं और इस्लाम के केंद्र में इस्लामी शिक्षाओं व चिन्हों का अपमान हो रहा है। मुसलमानों की बड़ी ज़िम्मेदारी है कि कम से कम दुआओं से और अपने नेक कामों से जो हम मदद कर सकते हैं वो करें, दुआ को मोमिन का हथियार कहा गया है, ये एक बड़ा ज़रिया है। फिर इस्राइली उत्पादों से मुकम्मल दूरी, और भी वो सब उपाय जिन से इस्राइली हितों पर चोट लगती हो अपनाई जाएं। हो सकता है जुल्मो सितम की ये आग ज़ालिम को ही भस्म कर दे।

अल्लाह के यहाँ देर है अंधेर नहीं।

❖❖❖

अपने पाठकों से

- सच्चा राही आपको कैसा लगा आप अपनी राय से अवगत करें, हम आपके पत्रों की प्रतीक्षा में रहते हैं। हम आपके सुझाओं का स्वागत करते हैं।
- हम अपने सम्मानित लेखकों से अनुरोध करते हैं कि वह सामाजिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, भौगोलिक विषयों पर अपने मूल्यवान लेख लिख कर हमें भेजें, हम आपके शुक्र गुज़ार होंगे।
- आप अपने लेख सरल भाषा में लिखें तथा विषय स्पष्ट हो, जो पाठकों को आसानी से समझ में आ सकें।
- आप सच्चा राही के नये ग्राहक बना कर हमारा सहयोग करें।
- आप अपनी आवश्यक दीनी समस्याएं लिखें हम उनके समाधान लिख कर सच्चा राही में प्रकाशित करेंगे।
- **आप अपने लेख भेजने के लिए उप सम्पादक के नं0 9450784350 का प्रयोग करें।**

E-mail: *jamalnadwi123@gmail.com*

ग़ाज़ा इस्राइल जंग-मुजरिम कौन?

मौलाना जाफर मसऊद हसनी नदवी

सन् 1948 में इस्राइल की स्थापना के समय से ही योरोप उसकी परवरिश कर रहा है जब कि वास्तविकता यह है कि इस्राइल की स्थापना सौ फीसद जुल्म व ज़ियादती, हलाक़त व बरबादी और जलावतनी पर आधारित है, उसके लिए जायज़ है कि वह चाहे कितने ही संगीन जुर्म करले, कितना ही ना हक़ खून बहाए और कितने ही बेगुनाहों की जान ले ले, या कितने ही फ़िलिस्तीनियों को बे घर करदे, और चाहे कितना ही बाइज़्ज़त औरतों को अपनी हवस का निशाना बना ले। अफसोस है कि इन्सानियत का यह नंगा नाच योरोप की सरपस्ती में हो रहा है बल्कि वह उसको प्रोत्साहित कर रहा है और वह हर तरह से उसकी मदद भी कर रहा है और आख़री हद तो यह है कि वह इन्सानियत के इस नरसंहार पर इस्राइल को मुबारकबाद दे रहा है।

सच्ची बात यह है कि अगर यही काम किसी और हुकूमत ने किया होता तो यही योरोपीय मुल्क उसको प्रतिबन्धों की बेड़ियों में जकड़ देते और उनका जीना दूभर कर देते और उसको ऐसी सज़ा देते कि वह दोबारा वैसी हरकत करने की हिम्मत न जुटा पाता।

कुछ लोग यह समझते हैं कि इस समय हमारा मुक़ाबला सिर्फ नाजायज़ इस्राइल से है लेकिन सच्ची बात यह है कि हमारा असल मुकाबला उस योरोप से है जिसने इस नाजायज़ रियासत को जन्म दिया, ताकि उसे अपने सियासी, आर्थिक और सैन्य फायदे हासिल होते रहें, यही कारण है कि पहले दिन से वह इस्राइल को मजबूत करने के लिए हर प्रकार का सहयोग करते रहे हैं।

इस्राइल वह नाजायज़ पौधा है जिसे पश्चिमी देशों ने फ़िलिस्तीन की पवित्र ज़मीन पर इस नियत से लगाया था कि उसके माध्यम से पूरे अरब जगत पर अपना ज़ालिमाना क़बज़ा जमा सके और उसकी नकेल अपने हाथ में ले सके, फिर उसको जैसे चाहे घुमाता रहे।

यह भी एक वास्तविकता है कि इस्राइल पश्चिमी देशों के लक्ष्यों और उद्देश्य से ऊपर एक स्वतंत्र राज्य का नाम नहीं है? बल्कि इस्राइल 100 प्रतिशत उसके हुक्मों का पालन करने वाला और उसके इशारों का गुलाम है, वह जहां खड़ा कर दें उसको वहीं खड़ा रहना होगा, जब वह चलने का हुक्म दें तो उसे चल कर दिखाना होगा, वह जब उसे हमले का इशारा करें तभी वह हमला करेगा, यहाँ तक कि वह हिंसक व क्रूर उसी समय होगा जब उसे पश्चिम का समर्थन व सहयोग प्राप्त हो।

जहाँ तक पश्चिम के निष्पक्ष एवं तटस्थ और अरबी जगत और इस्राइल के मध्य एक न्यायप्रिय माध्यम बनने की बात है और उसको इस्राइल का हितैषी समझने का तअल्लुक़ है तो यह सब बातें सरासर झूठ और धोका है, बल्कि यह उनके काले करतूतों और इतिहास से ना वाकफियत का परिणाम है, हमें पश्चिम का अस्ल चेहरा पहचानना चाहिए और अरब देशों से संबंधित उसके नापाक इरादों और मंसूबों से अवगत होना चाहिए। गज़्ज़ा में आज तबाही व बरबादी और नरसंहार की जो शर्मनाक खूनी दास्तान लिखी जा रही है और वहां बमों और मीज़ाइलों की जो बारिश की जा रही है, इन्सानियत के इस घिनौने नरसंहार पर पश्चिम का चुप्पी साधना इस बात का सुबूत है कि वह इस्राइल के कंधों से कंधा मिला कर खड़ा है और वह इसमें बराबर का मुजरिम है, सच्चाई यह है कि अगर उनका यह आपसी गठजोड़ न होता तो इस्राइल के इतना दम न था कि वह अकेले किसी फिलिस्तीनी को ज़रा भी तकलीफ़ पहुँचा सकता और किसी को तकलीफ पहुँचाना तो दूर की बात है बल्कि उसकी यह हिम्मत भी न थी कि स्वयं अपना बचाव करता, मगर बात यह है कि पश्चिम की भरपूर ताईद और इस्राइल के साथ हर मौक़े पर खड़े रहने ने इस्राइल को इस काबिल बना दिया है कि वह अपने पैरों पर चलने के लायक़ हो गया है। ◆◆

मज़लूम जियाले

—शाद अब्बासी

शायर को बताती है यह अख़बार की सुर्खी।
आती है फ़िलिस्तीन से आवाज़ अजब सी।।
टैंकों की गज़बनाकी से लरजाँ है वह धरती।
गिरने लगी मजलूमों पे फिर जुल्म की बिजली।।
फिर अबरहा परवाज़ को पर तौल रहा है।
बूजहल का उतरा हुआ सर बोल रहा है।।
सद्दाम कहाँ है सफ़े ईरान कहाँ है।
है शाम कहाँ जुरअते अफ़ग़ान कहाँ है।।
ढूँढो कि है तुर्की कहाँ लबनान कहाँ है।
दीवानो! उठो देखो कि ईमान कहाँ है।।
बढ़ कर उन्हें मज़लूमों की तस्वीर दिखा दो।
पैरों में पड़ी जुल्म की ज़न्जीर दिखा दो।।
खिरमन को जलाने के लिए बर्क़ उड़ी है।
यह जंग भी दरवाज़—ए—ख़ैबर की कड़ी है।।
फिर उसको मिटाने के लिए फ़ौज खड़ी है।
फिर तीन सौ तेरह की वही सख़्त घड़ी है।।
बेकारी बहुत कर चुके, कुछ काम करो अब।
आपस में बहुत लड़ चुके दुश्मन से लड़ो अब।।
ताइफ से उठो मिस्र के बाज़ार से निकलो।
आपस में बहुत लड़ चुके दुश्मन से लड़ो अब।।
मदहोशी की अब वादि—ए—पुरख़ार से निकलो।
क़िब्ले के लिए काबे की दीवार से निकलो।।
अय्यूबी की अ़ज़मत का भरम टूट रहा है।
फ़ारूक़ी जलालत का भरम टूट रहा है।।
ऐ अरजे फ़िलिस्तीन के मज़लूम जियालो।
इस्लाम की गिरती हुई दीवार संभालो।।
अब रौंद पाये कोई परचम को उठालो।
तुम हैदरे कर्रार की अब लाज बचालो।।
बे मुल्क यहूदी यह हैं आवारा चरिन्दे।
अमरीकी मशीनों के यह औज़ार हैं जैसे।।
यह सच है कि इस दौर में नाकाम हमीं हैं।
हर जुल्म को सहते हुए बदनाम हमीं हैं।
सूरज की तबोताब लिए शाम हमीं हैं।
पढ़लें हमें सब अम्न का पैग़ाम हमीं हैं।।
लहरायेंगे दुनिया में हमीं अम्न का परचम।
आज़ाद हुए क़ैदे तअस्सुब से अगर हम।।

❖❖❖

–पिछले अंक से आगे

इस्लामी कल्याणकारी व्यवस्थाएं: जनहित के कामों का महत्व

मौलाना सैयद जलालुद्दीन उमरी

ज़मीन को आबाद करनाः–

बंजर भूमि को जोतना, बोना तथा कृषि योग्य बनाना और इसमें सहायता देना भी कल्याणकारी और हितकारी सेवा है। इससे सामूहिक रूप से समस्त क़ौम और पूरे देश को लाभ होता है। सरकार स्वयं भी बंजर भूमि को उपजाऊ बना कर उसकी आय कल्याण कार्यों में लगा सकती है। ऐसा भी हो सकता है कि जो लोग उन ज़मीनों को आबाद करना चाहें उन्हें अनुमति दी जाए और उन्हें सहूलतें उपलब्ध कराई जाएं। इस्लाम ने इस बात की प्रेरणा दी है और इसे नेकी का काम बताया है कि बंजर और बेकार पड़ी हुई ज़मीनों को कृषि योग्य बनाया जाए। हज़रत जाबिर रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फ़रमाया–

o ''जिसने किसी निर्जीव भूमि को जीवन प्रदान किया उसे इसका अज्र मिलेगा, उससे ज़रूरतमंद (इन्सान, पशु पक्षी आदि) जो कुछ खाएंगे वह सब उसकी ओर से सदक़ा है।''

(मुसनद अहमदः 3/327)

किसी बेकार पड़ी हुई ज़मीन को जो व्यक्ति अपने परिश्रम से उपजाऊ बनाए तो उसका लाभ मूलतः उसे और उसके परिवार को पहुँचता है, क्योंकि यह परिश्रम एक जाइज़ उद्देश्य के लिए किया जाता है। अतः वह अज्र और सवाब का अधिकारी है। इसी के साथ यह भी बता दिया कि इससे कोई जीवधारी जो भी फ़ायदा उठाता है वह उसकी ओर से सदक़ा है। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि इस परिश्रम से इन्सानों और पूरे समाज को जो लाभ पहुँचेगा उसका कितना बड़ा अज्र होगा।

वर्तमान कल्याणकारी राज्य बेकार पड़ी हुई ज़मीनों को खेती योग्य बनाने में सहूलतें देते हैं। इस्लाम ने इससे आगे बढ़ कर और डेढ़ हज़ार वर्ष पूर्व ही यह प्रयास किया कि जो व्यक्ति इस प्रकार की ज़मीन को कृषि योग्य बनाए उसे उस भूमि पर स्वामित्व के अधिकार दे दिये जाएं। हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि0 रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फ़रमाया–

''जिसने किसी निर्जीव ज़मीन को जीवन प्रदान किया वह उसी की है।'' (तिर्मिज़ी)

यही बात हज़रत उमर ने भी फ़रमाई है। (मुवत्ता, बुख़ारी)

इस विषय में निम्नलिखित निर्देश दिये गये हैं ताकि व्यक्ति के अधिकारों और समाज के हितों को क्षति न पहुँचे–

(1) किसी अन्य व्यक्ति की ज़मीन को बेकार पड़ी हुई ठहरा कर उस पर अधिकार नहीं जमाया जाएगा। हज़रत आइशा रज़ि0 ने रिवायत की है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया–

o ''जिसने किसी ऐसी ज़मीन को कृषि योग्य बनाया या आबाद किया, जिसका कोई मालिक नहीं है तो वही उसका ज़्यादा अधिकारी है।'' (बुख़ारी)

इससे ज्ञात हुआ कि किसी ज़मीन को आबाद करने से उस पर व्यक्ति का अधिकार उसी समय माना जाएगा जबकि वह किसी अन्य के स्वामित्व में न हो। हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि0 की रिवायत अधिक स्पष्ट है। वह अल्लाह के रसूल सल्ल0 का यह कथन उद्धृत करते हैं–

''जिसने किसी निर्जीव भूमि को जीवन प्रदान किया वह उसी की है, परन्तु निष्ठुर प्रयास (अत्याचार से की हुइ खेती) का कोई अधिकार नहीं है।''

(अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

अर्थात बंजर भूमि और ग़ैरआबाद ज़मीन को उपजाऊ बनाने वाला और आबाद करने वाला ही उसका स्वामी होगा, परन्तु किसी बहाने से दूसरे की भूमि पर क़ब्ज़ा करना और उसमें खेती शुरु कर देना नाजाइज़ व अवैध है। यह खुला हुआ अन्याय है और अन्याय की किसी भी दशा में अनुमति नहीं हैं। उपरोक्त हदीस के तहत बताया गया है कि एक व्यक्ति ने दूसरे की ज़मीन में खजूर के पेड़ लगवा लिए थे। अल्लाह के रसूल सल्ल0 के सामने मुक़दमा पेश हुआ तो आपने फ़ैसला दिया कि भूमि उसके स्वामी की है और जिसके वृक्ष थे उसे आदेश दिया कि वह उन पेड़ों को कटवा कर ले जाए। अतः पेड़ कटवा दिये गये। (अबू दाऊउ)

इससे फ़िक़्ह की इस बात की पुष्टि होती है कि किसी बेकार पड़ी ज़मीन के स्वामी का पता न चले और उसे आबाद कर लिया जाए तो स्वामी का पता चलने पर ज़मीन उसे लौटा दी जाएगी और ज़मीन के मालिक की जो हानि हुई है ज़मीन को आबाद करने वाला उसकी क्षतिपूर्ति करेगा।

(हिदायाः 4/478)

(2) फ़िक़्ह हनफ़ी के विचार से बेकार पड़ी भूमि वह है जो आबादी से दूर हो। जो ज़मीन आबादी के निकट हो, उससे आबादी के अनेक हित जुड़े रहते हैं। अतः आबादकारी के आदेश इससे संबद्ध न होंगे।

इमाम शाफ़ई रह0 और इमाम अहमद रह0 आदि कहते हैं कि बेकार पड़ी ज़मीन को आबाद करने के लिए इस्लामी राज्य के शासक व इमाम की अनुमति की आवश्यकता नहीं है। जो व्यक्ति उसे आबाद करे उसी का अधिकार स्वीकार किया जाएगा परन्तु इमाम अबू हनीफ़ा रह0 ने शासक की राय को अनिवार्य ठहराया है। इमाम मालिक कहते हैं कि जो भूमि आबादी के निकट हो उसके लिए तो शासक व इमाम की अनुमति आवश्यक है, परन्तु जो भूमि दूर हो उसके लिए अनुमति की आवश्यकता नहीं है।

(हिदायाः 4/478, फ़तहुल बारीः 5/12)

(3) किसी ने ज़मीन की हदबन्दी कर ली और तीन वर्ष तक उसे आबाद न किया तो इस्लामी राज्य उससे भूमि लौटा लेगा तथा अन्य व्यक्ति को दे देगा। क्योंकि प्रथम व्यक्ति को ज़मीन इसलिए दी गयी थी ताकि वह उसे आबाद करे और 'उश्र' तथा 'ख़िराज' के द्वारा लोगों को लाभ पहँचे। केवल हदबन्दी को 'ज़मीन की आबादकारी' नहीं कहा जा सकता। (हिदायाः 4/478)

इसका समर्थन हज़रत उमर रज़ि0 के इस कथन से भी होता है–

''जिसने तीन वर्ष तक ज़मीन को बिना आबाद किये छोड़ दिया और किसी अन्य व्यक्ति ने आ कर उसे आबाद कर लिया तो वह उसी की होगी।'' (फ़तहुल बारीः 5/4)

(4) आबादकारी के अर्थ में कृषि एवं खेती भी है और मकान का निर्माण भी। 'हनफ़ी फ़िक़्ह' के अनुसार इसके प्रारम्भिक प्रयास भी इसमें सम्मिलित हैं।

(हिदायाः 4/477)

(5) बेकार पड़ी ज़मीन को आबाद करने का अधिकार मुसलमानों की भांति ज़िम्मियों (गैर मुस्लिमों) को भी प्राप्त होगा।

(हिदायाः4/4771

ग़ैर–आबाद या बंजर भूमि को आबाद करने के विषय में इस्लामी क़ानून बहुत विस्तृत है। यहां उसके केवल कुछ पहलुओं की ओर संकेत किया गया है।

वृक्षारोपणः–

आहार, स्वास्थ्य और पर्यावरण के दृष्टिकोण से वृक्षों का महत्व बिल्कुल स्पष्ट है। इनसे साफ़–सुथरी और स्वच्छ हवा मिलती है। वे ठंडी और आनन्ददायक छाया देते हैं। अनेक वृक्षों के फूलों और पत्तों में इन्सानों और पशुओं का आहार और उपचार है। उनमें वे वृक्ष भी हैं जो उत्तम, रूचिकर और उत्कृष्ट फल पैदा करते हैं, जो उत्तम पोषक तत्व वाले हैं

और जिनका विकल्प इन्सान के पास नहीं है। इनकी सूखी लकड़ी निर्माण के काम आती है, ईंधन में प्रयोग होती है तथा इनसे अन्य बहुत से लाभ उठाए जाते हैं।

जंगलों से लाभ तथा उनके प्रभावों से हम सब परिचित हैं। इनके द्वारा ठीक समय पर वर्षा होती है, मौसम में उचित और रुचिपूर्ण परिवर्तन आता है, प्रदूषण तथा अशुद्धता दूर होती है। वे भूमि–कटाव और बाढ़ की रोकथाम का भी साधन हैं। केवल यही नहीं बल्कि जंगलों के और भी बहुत से लाभ हैं।

ज़मीन की आबादकारी में वृक्षारोपण तथा बाग़ों का लगाना भी शामिल है। हदीसों में अलग से इसकी ओर विशेष ध्यान दिलाया गया है। हज़रत अनस रज़ि0 रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फ़रमाया–

o ''मुसलमान जो पौधा लगाता या कृषि करता है उससे पक्षी, इन्सान या पशु कुछ खाते हैं तो वह उसकी ओर से सदक़ा है।'' (बुख़ारी)

इसी अर्थ की एक रिवायत में हज़रत जाबिर रज़ि0 से उद्धृत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फ़रमाया–

o ''मुसलमान कोई वृक्ष लगाता है तो उससे जो कुछ खाया जाता है वह उसकी ओर से सद्क़ा है। (यहाँ तक कि) जो उससे चोरी हो जाए वह भी सद्क़ा है, जो जंगली पशु खा जाएं वह भी सद्क़ा है, पक्षी जो खाएं वह भी सद्क़ा है। कोई व्यक्ति उसमें से कुछ ले ले तो वह भी सद्क़ा है।'' (मुस्लिम)

हज़रत अनस रज़ि0 की हदीस के तहत हाफ़िज़ इब्ने हज़र कहते हैं कि इस हदीस में वृक्ष लगाने और खेती करने की श्रेष्ठता बताई गयी है और भूमि को आबाद करने की प्रेरणा भी दी गयी है।

o इसके बाद कहते हैं कि इससे उपजाऊ ज़मीन रखने और उसमें निवास करने का भी प्रमाण मिलता है। इससे उन सन्यासियों के विचार का भी खण्डन होता है जो इन कामों को बुरा समझते हैं। कुछ रिवायतों से ऐसा लगता है जैसे इन कामों को घृणा से देखा गया है, परन्तु यह उस दशा में है जब व्यक्ति इनमें व्यस्त हो कर दीनी कामों से ग़ाफ़िल हो जाए।

(फ़तहुल बारीः 5/3)

हज़रत मुआज़ रज़ि0 की रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फ़रमाया–

o ''जिस व्यक्ति ने किसी पर अत्याचार एवं ज़्यादती किये बिना किसी भवन का निर्माण किया अथवा अत्याचार एवं ज़्यादती किये बिना कोई वृक्ष लगाया तो उसके लिए जारी रहने वाला अज्र है जब तक कि अल्लाह तआला की मख़लूक़ उससे फ़ायदा उठाए।''

(मुसनद अहमदः3/338)

वृक्षारोपण अथवा बाग़ लगाने का काम इन्सान अपने निजी लाभ के लिए भी कर सकता है। इसका भी सवाब है। परन्तु यदि यही काम जनसाधारण के लाभ के लिए हो तो उसका अज्र और प्रतिदान पहले से अधिक है। यह 'अनवरत दान' का एक रूप है। अर्थात आदमी की मृत्यु के बाद उसके लगाए हुए वृक्ष से जब तक लोग फ़ायदा उठाएंगे उसे प्रतिदान (सवाब) मिलता रहेगा। मुस्लिम की जो रिवायत अभी ऊपर गुज़री है, उसमें 'क़यामत तक' के शब्द भी आये हैं, अर्थात उसे क़यामत तक अज्र व सवाब पहुँचता रहेगा। एक वृक्ष लगाया जाए तो उससे अनेक वृक्ष पैदा हो सकते हैं। इसी प्रकार किसी चीज़ की थोड़ी सी खेती अधिक खेती का कारण बन सकती है। जब तक यह बाक़ी है सवाब जारी रहेगा क्योंकि अल्लाह की मख़लूक़ उससे फ़ायदा उठाती रहेगी। यह क्रम क़यामत तक लंबा हो सकता है।

(नववीः शरह मुस्लिमः 2/15)

❖❖❖

फ़िलिस्तीनी विवाद और इस्राईली अत्याचार

हज़रत मौ0 सै0मु0 राबे हसनी नदवी रह0

मुल्के फ़िलिस्तीन का वह हरा भरा इलाक़ा जिस पर फ़िलिस्तीन की अर्थव्यवस्था और आबादी निर्भर है अतीत में वह इलाक़ा यहूदी हुकूमत को ट्रांन्सफर होता चला गया और अरब मुँह देखते रहे और समझौते की कोशिश करते रहे और यहूदियों ने अपनी सल्तनत बैतुलमुक़द्दस के मुहल्लों से जा मिलाई और आहिस्ता आहिस्ता अरब आबादियों को धक्के देकर पीछे खिसकाते रहे, अंग्रेज़, अरब जन्ता को आर्थिक बदहालियों और परेशानियों से घेरते रहे, अरब जायदादें यहूदियों के लिए बड़े–बड़े दाम देकर खरीदते रहे और अरब आर्थिक बदहाली से परेशान हो हो कर फ़िलिस्तीन छोड़ते रहे।

इस यहूदी वतन का जब इस ढंग से अरब मुल्क के सीने को चीर कर पेवन्द जोड़ा गया तो फ़िलिस्तीन के अरब अवाम की लाखों की तादाद मुल्क छोड़ने पर मजबूर हो गई, लेकिन जिहाद की रूह उनमें अब भी इस क़दर है कि यहूदी हमलों का जी खोल कर मुक़ाबला करते हैं और अरब इलाक़े के लिए केवल वही एक रोक हैं।

आज फ़िलिस्तीन में इस्राइली हुकूमत उसके पड़ोस के सारे मुल्कों के लिए एक सख़्त परेशानी, कष्टदायक और तनाव का मसला बन गया है, इस्राइल का इस इलाक़े में शुरु में कोई वजूद नहीं था, बरतानिया और पश्चिमी देशों ने उसको वहां ज़बरदस्ती क़ाबिज़ करा दिया फिर निरन्तर उसकी सहायता करके उसको एक मज़बूत ताक़त बना दिया। जिसने अपने प्रभाव बढ़ाए और इलाके के मूल निवासियों की बहुत बड़ी संख्या को जिनकी लाखों में गणना की जाती है वतन से बे वतन कर दिया और जो यहां रह गये और देश से बाहर न जा सके उनको गुलामों की तरह बाक़ी रखा गया और उससे ज़्यादा कष्ट दायक बात यह हुई कि उनके मुक़द्दस मुक़ामात को बिगाड़ने और बदलने की कोशिश शुरु की गई जो ख़तरनाक हद तक पहुँच गयी है, इसी वजह से केवल वहीं के अरब और मुसलमानों के लिए परेशानी का मसअला नहीं रहा बल्कि दुनिया में बसने वाले सारे अरब और मुसलमान उससे परेशान और फ़िक्रमन्द हो गये, इस सिलसिले में फ़िलिस्तीन के बाशिन्दों ने अपनी दीनी व इस्लामी हमीयत स्वाभिमान के प्रभाव से मुक़ाबले की जो कोशिश की उसको बहुत कठोर हिंसा द्वारा दबाने की कोशिश की जा रही है और उसके प्रभाव से वहां के निवासियों में अपने मिल्ली और दीनी पवित्र स्थानों की रक्षा के लिए जो जागृति और उत्साह पैदा हुआ उसने समस्त शत्रुओं को बेचैन कर दिया है।

मसअला सिर्फ़ यही नहीं है कि इस्राईली ताक़त अरबों और मुसलमानों को दबाने की कोशिश कर रही है और मुसलमान उसका मुक़ाबला कर रहे हैं बल्कि अमरीका और यूरोप अपनी सहायता और सहयोग से इस्राइल को मज़बूत बना रहे हैं। यह सिलसिला बहुत दिनों से जारी है लेकिन इस समय जो सूरते हाल है वह पूरे इलाक़े के अमनो अमान के लिए बड़ा ख़तरा बन गई है किस क़दर ज़्यादती और जुल्म की बात है कि मस्जिद अक़्सा जो सिर्फ यही नही कि मुसलमानों की मुकद्दस मस्जिद है बल्कि वह उन्हीं की आबादी के दरमयान है और वह पूरी तरह उससे संबंधित है, यहूदी उसको तोड़ कर अपनी इबादत गाह बनाना

चाहते हैं, ऐसी सूरत में फ़िलिस्तीन के सिर्फ़ अरब मुसलमान ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया के मुसलमानों के लिए बेचैनी और मिल्ली ग़ैरत का मसअला बन गया है, इसमें दुश्वारी यह ज़रूर है कि मुसलमान और अरब देशों की हुकूमतें पश्चिमी ताक़तों के दबाव से वह नहीं कर पा रही हैं जो उनको करना चाहिए लेकिन उन मुल्कों के मुस्लिम अवाम का दबाव उनको बिल आख़िर मजबूर करेगा कि इस शरारत और जुल्म का कोई इलाज करने की सही फिक्र करें।

अरब दुनिया में जो इस समय हालात हैं वह केवल अफ़सोस नाक ही नहीं बल्कि हर बा इज़्ज़त मुसलमान के ग़ौर करने और समझने के हैं। अरबों ने जब इस्लाम का पैग़ाम अपने सीने से लगाया तो उनके साधारण आदमी ने भी नाज़ुक से नाज़ुक नेतृत्व का कर्तव्य भलीभांति निभाया– बैतुल मुक़द्दस को अरब मुसलमानों ने इस तरह जीता कि ख़लीफ़–ए–दोयम हज़रत उमर रज़िअल्लाहु अन्हु अपने ग़ुलाम के साथ तशरीफ़ ले गये और ईसाइयों ने न सिर्फ़ यह कि बैतुल मुक़द्दस की कुंजियाँ उनके हवाले कर दीं बल्कि उनको अपने गिरजे के एक रुख पर नमाज़ पढ़ने की इजाज़त भी दी। चुनांचि उसी जगह आज तक ''मस्जिदे उमर'' के नाम की मस्जिद मौजूद है, उसी बैतुलमुक़द्दस को बाद के मुसलमान अपने पास न रख सके और ईसाइयों ने क़ब्ज़ा करके मुसलमानों को उससे बे दख़ल कर दिया और इस तरह 90 साल तक मुसलमान उससे महरूम रहे क्योंकि उनमें झगड़ा था, छोटी छोटी बातों पर आपसी लड़ाईयाँ थीं ख़ुदगर्ज़ी और निफ़ाक़ था लेकिन जब सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने उनको इस्लाम के नाम पर, अल्लाह और रसूल के नाम पर इकट्ठा किया और वह इकट्ठा हो गये तो ईसाइयों से बैतुल मुक़द्दस बड़े शानदार तरीक़े से वापस लिया–

बैतुल मुक़द्दस लेने के यह दो वाक़िए बड़े सबक़ आमोज़ हैं, एक में बहुत शांति पूर्वक काम लिया, क्योंकि हज़रत उमर रज़ि0 जैसा ख़ुदा तरस और आदर्श लीडर था दूसरे में हमीयते दीनी व जज़्ब–ए–कुरबानी के साथ लिया, क्योंकि सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी जैसा मुख़लिस और जाँबाज़ क़ाएद था।

आज बैतुल मुक़द्दस लेना तो बड़ी बात है वह छोटी मोटी ताक़त जो उसके लिए कुछ करती वही मिटी जा रही है जबकि मिल्लते इस्लामिया पिछले ज़मानों के मुक़ाबले में कई गुना ज़्यादा संख्या में है और कई गुना ज़बरदस्त असबाब व वसाएल रखती है। लेकिन जंगें न तो केवल संख्या से जीती जाती हैं और न केवल असबाब व वसाएल की बुनियाद पर जीती जाती हैं, इसके विरुद्ध इस्लाम हमको यह बताता है कि थोड़ी संख्या ईमान के साथ बड़ी संख्या पर भारी है। इस्लाम ने ईमान व इख़लास की शर्त रखी है और यही ईमान व इख़लास आज हमारी सियासत में हमारी क़ियादत में और हमारी तदबीर व हिकमत में सबसे कम है।

याद रहे! फ़िलिस्तीनियों की तबाही सिर्फ उन्हीं की तबाही नहीं बलिक अल्लाह महफ़ूज़ रखे, यह अरबों की तबाही का पहला क़दम है जो इस्राईल ने हालात का खूब जाएज़ा ले कर उठाया है और जिसमें वह बज़ाहिर अब तक कामयाब है। इस्राईल जो कि मिल्लते इस्लामिया के दसियों मुल्कों से भी छोटा है और उसकी तारीख़ बुज़दिली कायरता, ज़िल्लत और बरबादी की रही है, आज मिल्लते इस्लामिया के बड़े मुल्क भी उसके सामने हाथ बांधे खड़े हैं न उम्मत के हितों की परवाह न ग़ैरत और सम्मान का ख़्याल, लेकिन बात वही है जो कुरआन मजीद की इस आयत में है कि ''किसी भी क़ौम के साथ जो भी है अल्लाह

शेष पृष्ठ...21.....पर

पिछले अंक से आगे

भारत के अतीत में

मुस्लिम शासकों की धार्मिक निष्पक्षता

सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान

हिन्दुओं के धार्मिक पेशवाओं का सम्मानः—

के0 एम0 पानीकर ने अपनी किताब *"A SURVEY OF INDIAN HISTORY"* में लिखा है कि अलाउद्दीन खिलज़ी एक पक्षपात करने वाला शासक समझा जाता है लेकिन उसने हिन्दुओं के धार्मिक पेशवाओं का बहुत सम्मान किया। ज़ैन स्रोतों से पता चलता है कि अलाउद्दीन खिलज़ी ने आचार्य महासने को कर्नाटक से अपने दरबार में आमन्त्रित किया। उससे धार्मिक शास्त्रार्थ (मुनाज़रा) किया, यह भी कहा जाता है कि दिगम्बर सम्प्रदाय के पेशवा पूर्णचन्द्र जो दिल्ली में रहते थे और स्वयं योगी रामचन्द्र सूरी का सम्मान सुल्तान के यहाँ बहुत था।

ज़ियाउद्दीन बरनी और क़ाज़ी मुग़ीसुद्दीन दोनों को अवश्य मालूम रहा होगा कि अलाउद्दीन खिलज़ी ने हिन्दू राजाओं के सम्मान में उनके साथ राय रायान, फख्र—ए—रायान—हिन्दुस्तान की तरह व्यवहार करता रहा। जैनियों और हिन्दुओं के धार्मिक पेशवाओं का भी सम्मान किया जिसके बाद उन्होंने मनगढ़ंत हदीस के माध्यम से हिन्दुओं को इस्लाम का दुश्मन समझ कर अपमानित रखने का जो उपदेश दिया था, वह व्यावहारिक रूप से निरर्थक था। हाँ, इस उपदेश को अपने मुँह से निकाल कर न केवल अपने आप को बदनाम किया, बल्कि मुसलमानों के उस ज़माने के इतिहास को भी दाग़दार किया। किसी ज़माने में भी देहली के सुल्तानों का व्यवहार क़ाज़ी मुग़ीसुद्दीन के उपदेश के अनुसार न रहा। के0एम0 पानीकर का कथन है कि गयासुद्दीन तुग़लक के अधिकारियों में दो ज़ैन थे जिनका प्रभाव सुल्तान पर बहुत अधिक था।

इब्ने बतूता (1378 ई0) ने अपने सफ़रनामे में लिखा है कि सुल्तान मुहम्मद तुग़लक (मृत्यु 1351 ई0) के विरुद्ध एक हिन्दू सरकार ने दावा किया कि सुल्तान ने उसके भाई को बिना किसी कारण के मार डाला है। क़ाज़ी ने सुल्तान को अपने न्यायालय में तलब किया। वह बिना किसी सुरक्षाकर्मी के क़ाज़ी के न्यायालय में गया और वाहं जा कर सलाम और सम्मान किया। क़ाज़ी को पहले कहलवा भेजा था कि वह न्यायालय में आए तो उसका सम्मान न किया जाए। वह क़ाज़ी के सामने आरोपी की हैसियत से खड़ा हुआ। क़ाज़ी ने आदेश दिया कि सुल्तान दावेदार को राज़ी करे, वरना बराबर का दण्ड (क़िसास) का आदेश होगा। सुल्तान ने दावेदार को राज़ी किया तो उसकी गर्दन बच सकी।

इससे स्पष्ट होता है कि क़ाज़ी और सुल्तान दोनों उस हिन्दू सरदार के साथ अत्याचारपूर्ण व्यवहार करने की बजाए न्यायपूर्ण व्यवहार करने पर विवश थे और यह तो इतिहास की कितबों से कोई प्रमाणित नहीं कर सकता कि मुसलमानों के शासनकाल में न्याय करने में हिन्दू मुसलमान का भेद किया जाता था। जैसे—जैसे नये शोध सामने आ रहे हैं, उनसे अनुमान होता है कि दिल्ली के सुल्तानों के ज़माने में भी हिन्दू ज़िम्मेदारी के पदों पर नियुक्त होते रहे। सुल्तान मुहम्मद तुग़लक के शासनकाल में तो शासन व्यवस्था चलाने में बहुत से

हिन्दू सम्मिलित किए गये। चिनार के एक शिलालेख से मालूम हुआ कि उस सुल्तान का एक हिन्दू मंत्री साए राज था। स्वयं ज़ियाउद्दीन बरनी के कथन से मालूम होता है कि सुल्तान मुहम्मद तुग़लक ने देवगीर का मन्त्री इमादुल मुल्क को बनाया तो उसका उपमन्त्री ''धारा'' को नियुक्त किया। बरनी ही के कथन से मालूम होता है कि पीरामाली को दीवान–ए–वज़ारात के पद पर नियुक्त किया गया। सेरवान का शासक रतन बनाया गया। भीरान राय गुलबर्गा को मक्तअ (पँच) नियुक्त किया गया और उसको कोहीर का इक्ता दिया गया। इब्ने बतूता और आसामी दोनों का कथन है कि वह जोगियों से तर्क–वितर्क किया करता था। प्रोफेसर खलीक अहमद निज़ामी ने 'ए कम्प्रिहेन्सिव हिस्ट्री ऑफ इण्डिया' जो इण्डियन हिस्ट्री कॉंग्रेस से प्रकाशित हुई, में लिखा है कि जैनियों के स्रोतों से मालूम होता है कि सुल्तान ज़ैन धर्म के विद्वानों से सम्बन्ध रखता था। उनमें से एक ज़ैन, प्रभा सूरी ने उससे आधी रात तक धार्मिक मामले में बतचीत की, जिसके बाद सुल्तान ने उसको एक हज़ार गायें अन्य उपहारों के साथ दी। सुल्तान ने अन्य ज़ैन विद्वानों में राजा सिखारा और जीना प्रभासूरी को भी संरक्षण दिया। सुल्तान हिन्दुओं के त्यौहारों होली से भी दिलचस्पी लेता रहा। सुल्तान की यह निष्पक्षता कुछ लोगों में पसन्द नहीं की गयी, इसीलिए आसामी ने इसका उल्लेख करते हुए लिखा है।

आसामी की कविता से तो मालूम होता है कि मुहम्मद बिन तुग़लक नमाज़ आदि छोड़ कर जोगियों और हिन्दुओं की ओर झुक गया था और उसकी इस्लाम से दूरी हो गयी थी लेकिन यह कैसे विश्वास किया जाए जब इब्ने बतूता की आँखों देखी रिवायत है कि यह बादशाह नमाज़ के मामले में बहुत ज़ोर देता था। उसका आदेश था कि जो व्यक्ति जमाअत के साथ नमाज़ न पढ़े, उसको दण्डित किया जाए।

स्वयं शरीअत का पाबन्द था। शरीअत के आदेशों के पालन करने पर बहुत अधिक ज़ोर देता था। स्वयं बरनी का कथन है कि जब वह अज़ान की आवाज़ सुनता तो उछल कर खड़ा हो जाता और अज़ान के पूरा होने तक खड़ा रहता। सुबह की नमाज़ के बाद तस्बीहें भी पढ़ता (गुणगान भी करता)। बीमारी में भी रोज़ा कज़ा न करता अर्थात बीमारी में भी रोजा रखता, आशूरा (दस्वीं मुहर्रम) के दिन का भी रोजा रखता वह राजकाज छोड़ कर मक्का चले जाने का कभी कभी इरादा करता। बुराईयों से हमेशा परहेज़ करता रहा। वह ह़ाफ़िज़े कुरआन भी था, आदि, आदि। फिर उस पर इस्लाम से हटने और कुफ़्र का आरोप आसामी ने कैसे लगा दिया। इतिहासकार का क़लम भी अजीबो–गरीब होता है। उसके क़लम का हुस्न करिश्मा साज़ जो चाहे कर सकता है, बात यह है कि सुल्तान में असाधारण प्रतिभा थी, उसका ज्ञान भी व्यापक था, कुरआन, हदीस, फ़िक़्ह, तर्कशास्त्र और दर्शन आदि सबका उसको ज्ञान था। इसलिए अपनी सभाओं में कभी कायनात के रचयिता, कभी कायनात के रचनाकार का एकत्व, कभी पैगम्बरी की सच्चाई पर बहस उठ खड़ी होती जिसमें दार्शनिक और तार्किक रंग पैदा हो जाता। रूढ़िवादियों और अन्धानुकरण करने वालों की सभाओं में यह रंग पसंद नहीं किया जाता। इसलिए सुल्तान मुहम्मद तुग़लक़ से भी बदगुमानी हो गयी। यह केवल

उसकी उदारता थी कि वह हिन्दू और ज़ैन धर्म के सम्बन्ध में भी जानकारी प्राप्त करने के प्रयास में लगा रहा। उन धर्मों के विद्वानों को भी अपनी सभाओं में आमन्त्रित करता रहा। 15वीं सदी के एक पुर्तगाली लेखक नवनेज़ ने लिखा है कि सुल्तान ने गुज़रात के अभियान के ज़माने में एक शिवालय भी बनाया था।

डॉ0 ईश्वरी प्रसाद जब इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्रोफ़ेसर थे तो उन्होंने अपनी अन्य किताबों के साथ हिस्ट्री ऑफ दी करदना टर्क्स भी लिखी। उसमें सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लक के विभिन्न कारनामों का उल्लेख करते हुए लिखते हैं कि उस युग में मसालिकुल अबसार लिखी गयी। इसका लेखक सुल्तान के जुल्म और अत्याचार का उल्लेख नहीं करता। वह हिन्दुओं के निर्दयतापूर्वक क़त्ल का संकेत भी नहीं करता। हालांकि उसके ज़माने में हिन्दुओं के साथ जो बुरा व्यवहार किया जाता, उसका उल्लेख मुसलमानों का धार्मिक वर्ग बड़ी प्रसन्नता के साथ करता है। डॉ0 ईश्वरी प्रसाद ने मौलाना ज़ियाउद्दीन बरनी और क़ाज़ी मुगीसुद्दीन जैसे उलमा ही को सामने रख कर मुसलमानों के धार्मिक वर्ग पर आरोप लगा दिया है। उनका यह आरोप किसी हद तक सही है। जब यह दोनों उलमा का भेष पहने हुए थे तो उनको ऐसी बुरी बातें मुँह से या क़लम से निकालते समय सोच लेना चाहिए था। उनके कहने या लिखने की प्रतिक्रिया क्या हो सकती है, ज़ियाउद्दीन बरनी इतिहास लिख रहे थे, जिसके बारे में वह समझते थे कि न केवल उन्हीं के दौर में बल्कि हर ज़माने में पढ़ी जाएगी। उनको हर बात सोच कर लिखना चाहिए था और जब वह उलमा के प्रतिनिधि बन रहे थे तो जिन बातों से उलमा से बदगुमानी पैदा हो सकती थी, उनको लिखने से अवश्य बचना चाहिए था। इस दृष्टिकोण से डॉ0 ईश्वरी प्रसाद से तो शिकायत नहीं पैदा होनी चाहिए कि उन्होंने धार्मिक वर्ग पर यह आरोप क्यों लगा दिया। बल्कि मौलाना ज़ियाउद्दीन बरनी पर आरोप है कि उन्होंने धार्मिक वर्ग के सम्बन्ध में इस तरह का दृष्टिकोण बनाने का अवसर दिया।

.....जारी.....

❖❖❖

पृष्ठ .....18...का शेष

उसको उस समय तक हरगिज नहीं बदलता जब तक वह खुद अपने अन्दर तब्दीली पैदा न कर लें'' (सूरः रअ़द आयत नं011)

अमरीकी प्रसंशक और अमरीका की चापलूसी करने वालों को क्या कहा जाए, उन्होंने जब अपने दामन को अमरीका से संबंधित किया तो वह अमरीका और उसके लैपालक इस्राईल को आँखें कब दिखा सकते हैं?

इस्लामी जगत जिनके देशों को हम आज़ाद समझते रहे हैं वास्तव में वह आज़ाद नहीं हैं, हर देश किसी न किसी बड़ी ताक़त से संबंधित है, लेकिन ज़्यादा अफ़सोस की बात यह है कि वह ज़रूरत से ज़्यादा वफ़ादारी करने की कोशिश करता रहा है, जो ग़ैरत–ओ–हमीयत के विरुद्ध बल्कि मुल्की व ज़ाती हितों के भी ख़िलाफ़ साबित होती रही है, फ़िलिस्तीनियों को ख़त्म करने के बाद क़रीब के देशों की सलामती का क्या एतिबार रह जाता है, एक के बाद एक निशाने पर आ सकते हैं।

अल्लाह तआला से दुआ है कि हालात को बेहतर बनाये और बातिल ताक़तों को हक़ के मुक़ाबले में नाकाम और नामुराद बनाए। आमीन।

❖❖❖

इस्लाम आतंक नहीं
अनुसरणीय जीवन–आदर्श

स्वामी लक्ष्मीशंकराचार्य

कई साल पहले ''दैनिक जागरण'' में श्री बलराज मधोक का लेख 'दंगे क्यों होते हैं?'' पढ़ा। इस लेख में हिन्दू–मुस्लिम दंगा होने का कारण कुरआन मजीद में काफिरों से लड़ने के लिए अल्लाह के फरमान बताये गये थे। लेख में कुरआन मजीद की वे आयतें भी दी गयी थीं।

इसके बाद दिल्ली से प्रकाशित एक पैम्फलेट (पर्चा) 'कुरआन की चौबीस आयतें, जो अन्य धर्मावलम्बियों से झगड़ा करने का आदेश देती हैं।' किसी व्यक्ति ने मुझे दिया। इसे पढ़ने के बाद मेरे मन में जिज्ञासा हुई कि मैं कुरआन पढ़ूं। इस्लामी पुस्तकों की दुकान में कुरआन का हिन्दी अनुवाद मुझे मिला। कुरआन मजीद के इस हिन्दी अनुवाद में वे सभी आयतें मिलीं जो पैम्फलेट में लिखी थीं। इससे मेरे मन में यह गलत धारणा बनी कि इतिहास में हिन्दू राजाओं व मुस्लिम बादशाहों के बीच जंग में हुई मार–काट तथा आज के दंगों और आतंकाद का कारण इस्लाम है। दिमाग भ्रतिम हो चुका था इस भ्रमित दिमाग से हर आतंकवादी घटना मुझे इस्लाम से जुड़ी दिखायी देने लगी।

इस्लाम, इतिहास और आज की घटनाओं को जोड़ते हुए मैंने एक पुस्तक लिख डाली 'इस्लामिक आतंकवाद का इतिहास' जिसका अंग्रेज़ी अनुवाद *"The History of Islamic Terrorism"* के नाम से सुदर्शन प्रकाशन, सीता कुंज लिबर्टी गार्डेन, रोड नम्बर–3, मलाड (पश्चिम) मुम्मई–400064 से प्रकाशित हुआ।

मैंने हाल में इस्लाम धर्म के विद्वानों (उलमा) के बयानों को पढ़ा कि इस्लाम का आतंकवाद से कोई संबंध नहीं है। इस्लाम प्रेम, सद्भावना व भाई–चारे का धर्म है। किसी बेगुनाह को मारना इस्लाम धर्म के विरुद्ध है। आतंकवाद के खिलाफ फतवा भी जारी हुआ।

इसके बाद मैंने कुरआन मजीद में जिहाद के लिए आयी आयतों के बारे में जानने के लिए मुस्लिम विद्धानों से संपर्क किया, जिन्होंने मुझे बताया कि

मुसलमान आतंकी नही

आतंकवाद पर मुसलमानों के विचार जानने के लिए मैंने हज़ारों मुसलमानों से संपर्क किया। इनमें सभी मुसलमानों के अपने पड़ोसी गैर–मुसलमानों से भाई या मित्र से संबंध मैंने देखे। उनमें से कोई भी मुसलमान नहीं चाहता कि निर्दोष लोगों की कोई हत्या करे। गैर–मुसलमान (जिन्होंने मुसलमानों का कुछ न बिगाड़ा हो) से नफ़रत करने वाला, आतंकवाद समर्थक एक भी मुसलमान मुझे नहीं मिला। इसके बाद भी यदि कोई ऐसा है तो उसके लिए सभी मुसलमानों को या इस्लाम को किसी प्रकार घुमा–फिरा कर दोषी नहीं ठहराया जा सकता। वह अपवाद है और ऐसे अपवाद सब जगह होते हैं। आतंकवाद के दुष्परिणाम मुसलमान और गैर–मुसलमान दोनों भुगत रहे हैं। क्योंकि आतंकवाद का शिकार दोनों हो रहे हैं, जबकि शक की नज़र से केवल मुसलमान ही देखे जा रहे हैं। आतंकवाद, आतंकवाद है उसे किसी धर्म या सम्प्रदाय से जोड़ना अन्यायपूर्ण है।

कुरआन मजीद की आयतें विभिन्न तत्कालीन परिस्थितियों में उतरीं। इसलिए कुरआन मजीद का केवल अनुवाद ही न देख कर यह भी देखा जाना ज़रूरी है कि कौन–सी आयत किस परिस्थिति में उतरी, तभी उसका सही मतलब और मक़सद पता चल पायेगा।

साथ ही ध्यान देने योग्य है कि कुरआन इस्लाम के पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतारा गया था। अतः कुरआन को सही मायने में जानने के लिए पैग़म्बर मुहम्मद सल्ल0 की जीवनी से परिचित होना भी ज़रूरी है।

विद्वानों ने मुझसे कहा– ''आपने कुरआन मजीद की जिन आयतों का हन्दी अनुवाद अपनी किताब में लिया है, वे आयतें अत्याचारी काफिर मुश्रिक लोगों के लिए उतारी गयीं जो अल्लाह के रसूल सल्ल0 से लड़ाई करते और मुल्क में फसाद करने के लिए दौड़े फिरते थे। सत्य धर्म की राह में रोड़ा डालने वाले थे ऐसे लोगों के विरुद्ध ही कुरआन में जिहाद का फरमान है।

उन्होंने मुझसे कहा कि इस्लाम की सही जानकारी न होने के कारण लोग कुरआन मजीद की पवित्र आयतों का मतलब समझ नहीं पाते। यदि आपने कुरआन मजीद के साथ हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की जीवनी पढ़ी होती, तो आप भ्रमित न होते।''

मुस्लिम विद्वानों के सुझाव के अनुसार मैंने सबसे पहले पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की जीवनी पढ़ी। जीवनी पढ़ने के बाद इसी नज़रिये से जब मन की शुद्धता के साथ कुरआन मजीद शुरु से अंत तक पढ़ा, तो मुझे कुरआन मजीद की आयतों का सही मतलब और मकसद समझ में आने लगा। सत्य सामने आने के बाद मुझे अपनी भूल का एहसास हुआ कि मैं अनजाने में भ्रमित था और इसी कारण ही मैंने अपनी उक्त किताब 'इस्लामिक आतंकवाद का इतिहास' में आतंकवाद को इस्लाम से जोड़ा है जिसका मुझे हार्दिक खेद है।

मैं अल्लाह से, पैगम्बर मुहम्मद सल्ल0 से और सभी मुस्लिम भाइयों से सार्वजनिक रूप से माफी मांगता हूँ तथा अज्ञानता में लिखे व बोले शब्दों को वापस लेता हूँ। सभी जनता से मेरी अपील है कि 'इस्लामिक आतंकवाद का इतिहास' पुस्तक में जो लिखा है उसे शून्य समझें।

शेष पृष्ठ ....27....पर

इस्लामी आदर्श स्वीकार करने योग्य

इस्लाम ने सत्य का नारा ''अल्लाहु अकबर'' यानी अल्लाह सबसे बड़ा है। और ''ला इला–ह इल्लल्लाह'' यानी अल्लाह के अलावा दूसरा कोई पूज्य नहीं, के रूप में इस महान सत्य को सारी दुनिया को दिया। इस्लाम, आतंक नहीं, आदर्श है। इस्लाम का यह आदर्श स्वीकार करने योग्य है। इस्लाम केवल मुसलमानों के लिए हो आदर्श नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए ही, मानवता के कल्याण के लिए है। विदित है कि ऐसे इस्लाम को बदनाम करने के लिए, आतंकवाद को मुसलमान से जोड़ने की बड़ी सुनियोजित साजिश की जा रही है। मोबाइल से एस.एम.एस. भेज कर प्रचारित किया जाता है कि 'हर मुसलमान आतंकवादी नहीं है, लेकिन हर आतंकवादी मुसलमान है'। आतंकवादी यदि मुसलमान ही होते तो आतंकवादी हमले मुसलमानों पर न होते, हैदराबाद की मस्जिद तथा मालेगाँव (महाराष्ट्र) की ईदगाह पर ये हमले न होते।

हम ज़िन्दा हैं और आप मर चुके हैं

(इजराइल के ख़ौफ़नाक मंसूबे)

इं0 जावेद इक़बाल

उपरोक्त शीर्षक के यह शब्द फ़िलिस्तीनी सदस्य रियाज मंसूर के हैं जो उन्होंने संयुक्त राष्ट्र महासभा में आंखों से छलकते आंसुओं के साथ कहे थे। मानवीय आधार पर जंगबंदी के प्रस्ताव पर बहस के दौरान अपना पक्ष रखते हुए और ग़ज़ा का हाल बयान करते हुए उन्होंने कहा कि इजराइल ने अब तक फ़िलिस्तीन के तीन हजार बच्चों और 1700 महिलाओं सहित सात हजार बेगुनाह नागरिकों की जान ले ली है और इस समय भी भयानक बमबारी जारी है। उन्होंने कहा कि ग़ज़ा में पूरे–पूरे मुहल्ले खंडहर बन चुके हैं और पूरे पूरे परिवार मौत की नींद सो चुके हैं।

ग़ज़ा में अभी भी 1600 बच्चे मलबे में दबे हुए हैं। उन्होंने यह भी कहा कि इस भयानक तबाही के बाद फ़िलिस्तीन के लोग लौट कर कहां जायेंगे वहां उनके रहने के लिए कोई घर सुरक्षित नहीं बचा है, इजराइल ने वहां चौदह लाख लोगों को बेघर कर दिया है।

जब यह पंक्तियां लिखी जा रही हैं तब तक ग़ज़ा में आठ हजार से अधिक लोग मारे जा चुके हैं और सत्तरह हज़ार से अधिक लोग घायल हैं।

संयुक्त राष्ट्र में चार बार की कोशिशों के बाद 28 अक्टूबर को यह प्रस्ताव 120 देशों के समर्थन के साथ पारित हो सका है, 14 देशों ने इस के विरोध में वोट डाला तथा भारत सहित 40 देशों ने मतदान में भाग न लेकर इजराइल की क्रूरता से आंखें मूंद लीं। 120 देशों के समर्थन से पारित होने के बावजूद इजराइल की नज़र में इस का कोई महत्व नहीं है। संयुक्त राष्ट्र की इसी महासभा में इजराइल के राजदूत गिलाद एरदान ने बड़ी बेशर्मी के साथ स्पष्ट शब्दों में कहा कि हमें अपने देश की रक्षा करने का पूर्ण अधिकार है। एर्दान ने यह तक कह दिया कि संयुक्त राष्ट्र की अब कोई हैसियत नहीं रह गई है और यह प्रस्ताव पूर्णतः हास्यास्पद है।

सच्चा राही के पाठकों को याद होगा कि संयुक्त राष्ट्र एवं उसकी शाखाओं का परिचय कराते हुए माह जनवरी 2023 के अंक में हम लिख चुके हैं कि दूसरे महायुद्ध के बाद 1945 में जब से यह संस्था वुजूद में आई है कभी भी दुनिया की जंगों में शांति स्थापित करने में इसे कोई सफलता नहीं मिली है।

ग़ज़ा की तबाही, अवाम पर अत्याचार, इजराइल की क्रूरता की सभी ख़बरें आप अख़बारों में पढ़ ही रहे होंगे और सोशल मीडिया पर सुन भी रहे होंगे, इसलिए उसका उल्लेख यहां करना व्यर्थ है। वैसे भी जब तक सच्चा राही का यह अंक आपके हाथों में पहुंचेगा तब तक इजराइल का वहशीपन न जाने कितना भयानक रूप धारण कर चुकेगा और युद्ध विराम की स्थिति क्या होगी सब कुछ सामने आ चुकेगा।

अतः इस समय युद्ध के कारणों पर कुछ प्रकाश डालना उचित होगा।

फ़िलिस्तीन के साथ इस्राइल का संघर्ष यूं तो उस समय से चल रहा है जब से दूसरे विश्व युद्ध के बाद 1945 में उस की स्थापना फिलस्तीन की धरती पर की गई थी। तब से अब तक छोटी बड़ी जंगें दोनों पक्षों के बीच होती रही हैं। हर बार इस्राइल ने फ़िलिस्तीन की धरती पर अपनी सीमाओं का विस्तार किया है। आरंभ से ही

उस का उद्देश्य वृहद इस्राइल (*Greater Israel*) बनाना रहा है। यहूदी क्योंकि हजरत इसहाक के वंश से हैं वे हजरत इस्माईल के वंश को कोई महत्व नहीं देते, वैसे भी हजरत इस्माईल के वंश में कोई महत्वपूर्ण शासक या नबी, हजरत मुहम्मद सल्ल० से पहले नहीं हुआ। हजरत मुहम्मद सल्ल० के जमाने में मदीना और मक्का नगरों के इलाकों में यहूदी आबाद थे जिन्हें इस्लामी सत्ता स्थापित होने के बाद, अल्लाह के हुक्म से अरब क्षेत्र से निष्कासित कर दिया गया था। अपमान जनक निष्कासन का दर्द उनके सीने में स्वभाविक रूप से सदैव ही पलता रहा। अपने धार्मिक ग्रंथों में हजरत मुहम्मद सल्ल० के अन्तिम रसूल के रूप में आने के संकेत होने के बावजूद वे कभी भी हजरत इस्माईल के वंश में आए हुए अंतिम नबी को स्वीकार नहीं कर सके। यही कारण है कि वे अब इस पूरे इलाक़े पर अपना वर्चस्व स्थापित करना चाहते हैं।

यह तो हुई धार्मिक आधार पर सैंकड़ों हजारों वर्षों से चली आ रही भावनात्मक इच्छा।

वर्तमान में इस संघर्ष के आर्थिक कारण अधिक महत्वपूर्ण हैं। ग़ज़ा 130 कि० मी० लम्बा और 50–60 कि० मी० चौड़ा जमीन का टुकड़ा है, इस के पश्चिमी ओर पूरी लम्बाई में समंदर है। ग़ज़ा पर कब्जे के बाद इजराइल और उसके संरक्षक देश विशेषकर अमेरिका फ्रांस और ब्रिटेन उस क्षेत्र के समंदरी रास्तों पर कब्जा कर के वहां पाई जाने वाली गैस के विशाल भंडारों तथा अन्य कीमती धातों के भंडारों पर अपना अधिकार जमाना चाहते हैं।

हमास को इस मंसूबे का एहसास हो गया था, पिछले एक साल से इजराइल की गतिविधियों पर हमास की नजर थी। इस से पहले कि इजराइल ग़ज़ा पर हमला करता हमास ने ''तूफानुल अक़्सा'' के नाम से पहल करके इजराइल के मंसूबों पर जबरदस्त चोट की। उसने इजराइल के बहुचर्चित ''आयरन डोम'' की हवा निकाल दी। आयरन डोम एक ऐसी तकनीक है जिसके जरिए इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के संचालन द्वारा इजराइल के शहरों के ऊपर छत्तरी की तरह सुरक्षा कार्य करती है।

इजराइल के शहरों पर यदि कोई मीज़ाइलों से हमला करे तो यह इलेक्ट्रॉनिक संयंत्र उन्हें आकाश ही में तबाह कर सकते हैं। यह एक बहुत मंहगी तकनीक है। एक बार के हमले को रोकने पर ही हजारों डालर का ख़र्च आता है। हमास ने आपरेशन तूफानुल अक़्सा के जरिए आयरन डोम का भ्रम तोड़ दिया। इजराइल का मंसूबा तो यह भी था कि अन्य जंगी उपकरणों की तरह आयरन डोम की अहमियत सऊदी अरब को समझाए और ख़ान–ए–काबा व मस्जिदे नबवी की सुरक्षा के लिए इस्तेमाल करने हेतु खरीदने के लिए उसे राजी करे। इस मंसूबे के द्वारा सऊदी अरब को खूब लूटा जा सकता था।

संभवतः अब स्वयं इजराइल में आयरन डोम का हशर देख कर सऊदी अरब को समझ आ जाए और वह इस मंसूबे पर अमल न करे।

हमास ने पहल करके इजराइल पर बरतरी हासिल कर ली और पहले ही चरण में 250 नागरिकों को, जिस में अधिकांश फौजी हैं, बंधक बना लिया। इजराइल ने बौखलाहट में अपनी खीज मिटाने के लिए ग़ज़ा पर राकेटों से हमला कर दिया। वह अब भयानक और निरंतर बमबारी करके आम शहरियों को मार रहा है इमारतों को ध्वस्त कर रहा है मगर हमास भी लगातार उसके टैंकों, जंगी जहाजों और फौजी अड्डों

को तबाह कर रहा है। अमेरिका और यूरोपीय देश अरबों–खरबों डालर का असलहा तथा अपने फौजी इत्यादि सहायता के रूप में इजराइल को दे रहे हैं।

इतना व्यय कोई मुफ्त में नहीं करता, इसके पीछे एक अन्य मंसूबा है। ये षड़यंत्रकारी देश मिस्र, उरदुन, लेबनान, सऊदी अरब इत्यादि सभी खाड़ी देशों की प्राकृतिक सम्पत्तियों पर कबजा करना चाहते हैं। इतना ही नहीं उन दुष्टों का एक मंसूबा और है जो नहर सुईज से जुड़ा है आइए उसे भी समझने की कोशिश करते हैं।

नहर सुईज का निर्माण 1860 में ब्रिटेन और फ्रांस के सहयोग से हुआ था उस समय मिस्र स्वतंत्र नहीं था। यह 163 कि० मी० लम्बी नहर है जो लाल सागर और मेडिटेरियन सागर को मिलाती हैं, इसे मिस्र की जमीन को काट कर बनाया गया था, इसकी चौड़ाई 300 मीटर है।

इस नहर के बनने के बाद दुनिया भर का व्यापार लगभग 70–80 प्रतिशत इसी नहर के रास्ते होता है ,योरोप के लिए तो यह नहर शह–रग के समान है। खाड़ी देशों से तेल गैस तथा अन्य सभी माल बरदार जहाज इसी नहर से होकर गुजरते हैं, अगर यह नहर बंद कर दी जाए तो योरोप की सभी आर्थिक गतिविधियां ठप पड़ जायें।

मिस्र की स्वतंत्रता के बाद राष्ट्रपति जमाल अब्दुल नासिर के जमाने में मिस्र ने इस नहर का राष्ट्रीयकरण कर लिया, मिस्र की धरती पर तो बनी ही थी, राष्ट्रीयकरण के बाद यह मिस्र के नियंत्रण में आ गई और मिस्र की आय में बहुत ज़्यादा वृद्धि हो गई। योरोप को यह बात पसंद नहीं आई, उस ने नए नए बने इजराइल को उकसा कर मिस्र पर हमला कर दिया, बड़ी भयानक जंग हुई मगर इजराइल को सफलता नहीं मिली। इजराइल आज तक उस कसक को भूला नहीं है। वर्तमान में मिस्र पर 400 अरब डॉलर का कर्ज है, वर्तमान राष्ट्रपति अब्दुल फत्तह अल सीसी अमेरिका के पिट्ठू समझे जाते हैं, उन पर दबाव बनाया जा रहा है कि यदि सहराए सीना के इलाक़े में गाजा के विस्थापित नागरिकों को बसने की अनुमति दे दी जाए तो उसका 400 अरब डॉलर का क़र्ज माफ कर दिया जाएगा। दूसरी ओर गाजा पर अंधाधुंध बमबारी करके गाजा निवासियों को मजबूर किया जा रहा है कि वह अपना वतन छोड़ कर भाग जायें।

ग़ज़ा पर इजराइल अपना क़बजा क्यों चाहता है:–

इसका एक कारण और भी है। दरअसल अमेरिका यूरोप सहित इजराइल को हर समय यह डर लगा रहता है कि मिस्र ने यदि किसी समय नहर स्वीज बंद कर दी तो उनका दुनिया से कारोबारी संबंध कट जाएगा और वे गंभीर संकट में फंस जायेंगे। इसलिए उन्हें स्वीज जैसी एक अन्य नहर की जरूरत है जो कि इजराइल के ''इलात'' नामक बंदरगाह भू मध्य सागर को मिला सकेगी, यह नहर ग़ज़ा की ज़मीन से हो कर गुजरेगी। इलात बंदरगाह भी इजराइल के द्वारा हथियाई हुई फ़िलिस्तीन की ज़मीन पर है। इस नहर का नाम इजराइल के पहले राष्ट्रपति ''बिन गोरियन'' के नाम पर रखना प्रस्तावित है। यह नई नहर सुईज नहर के मुक़ाबले में 40 कि० मी० लम्बी होगी अर्थात इस की लम्बाई 202 कि ० मी० होगी। इजराइल का दावा है कि वह इस नहर को दो से तीन महीने के अंदर बना देगा। हालांकि यह पथरीला इलाका है दो तीन महीने का समय बहुत कम है मगर इजराइल सैकड़ों एटम बमों का इस्तेमाल करने का इरादा रखता है। इस तरह अमेरिका

यूरोप और इजराइल की नहर सुईज पर से निर्भरता समाप्त हो जाएगी।

तुर्की, लेबनान, सीरिया, जार्डन इत्यादि के समन्दरी छेत्रों में तेल और गैस के अतिरिक्त अनेक बहुमूल्य खनिज पदार्थों के प्राकृतिक भंडार पाए गए हैं अलंकृत भाषा में हम कह सकते हैं कि यह सोने के पहाड़ हैं जो अल्लाह तआ़ला का अतिया है। तुर्की ने तो बड़ी मात्रा में गैस निकालना भी आरंभ कर दिया है। वर्तमान समय में गैस का महत्व बहुत बढ़ गया है। इसीलिए अमेरिका ब्रिटेन फ्रांस इन प्राकृतिक संसाधनों पर अपना अधिकार जमाना चाहते हैं जिस के लिए इजराइल को लाखों बिलियन डॉलर की सहायता देकर उसका निरंतर विस्तार करते रहते हैं, यही तो ग्रेटर इजराइल की कल्पना है, इस मंसूबे के अंतर्गत मिस्र के दरिया–ए–नील और दक्षिण पश्चिम एशिया की सबसे बड़ी नदी फुरात पर कब्जा करना भी शामिल है।

इस तरह हम देखते हैं कि पश्चिम एशिया के मुस्लिम मुल्कों को अल्लाह तआला ने प्राकृतिक संसाधनों से मालामाल किया हुआ है मगर अफसोस उन्होंने इल्म व हुनर के आधार पर कोई उन्नति नहीं की जिस के कारण वे सब के सब छोटे छोटे क्षेत्रों में बट कर अमेरिका और यूरोप के गुलाम बने हुए हैं। इजराइल के द्वारा ग़ज़ा पर जुल्म के पहाड़ तोड़े जा रहे हैं, लगभग दस हज़ार बेगुनाह नागरिकों की हत्या की जा चुकी है दुनिया भर के विभिन्न देश इस नरसंहार का विरोध कर रहे हैं मगर किसी भी मुस्लिम देश की हिम्मत नहीं हुई कि उस के ख़िलाफ कड़े शब्दों में निन्दा भी कर सकता। यह तो कहिए अल्लाह तआला की गैबी मदद ग़ज़ा के वीरों के साथ है जो लगभग महीने भर से अकेला ही इजराइल को नाकों चने चबवा रहा है।

❖❖❖

पृष्ठ ....23....का शेष
दुष्प्रचार

शुरुआत कुछ इस तरह हुई कि भारत सहित दुनिया में यदि कहीं विस्फोट हो या किसी व्यक्ति अथवा व्यक्तियों की हत्या हो और उस घटना में संयोगवश मुसलमान शामिल हैं तो उसे इस्लामिक आतंकवाद कहा गया।

थोड़े ही समय में मीडिया सहित कुछ लोगों ने अपने–अपने निजी फायदे के लिए इसे सुनियोजित तरीक़े से इस्लामिक आतंकवाद की परिभाषा में बदल दिया। इस सुनियोजित प्रचार का परिणाम यह हुआ कि आज कहीं भी विस्फोट हो जाए उसे तुरंत इस्लामिक आतंकवादी घटना मान कर ही चला जाता है।

इसी माहौल में पूरी दुनिया में जनता के बीच मीडिया के माध्यम से और पश्चिमी दुनिया सहित कई अलग–अलग भाषाओं में सैकड़ों किताबें लिख–लिख कर यह प्रचारित किया गया कि दुनिया में आतंकवाद की जड़ इस्लाम है।

इस दुष्प्रचार में यह प्रमाणित किया गया कि कुरआन में अल्लाह की आयतें मुसलमानों को आदेश देती हैं कि वे अन्य धर्मों के मानने वाले काफिरों से लड़ें, उनकी बेरहमी के साथ हत्या करें या उन्हें आतंकित कर जबरदस्ती मुसलमान बनाएं, उनके पूजा स्थलों को नष्ट करें– यह जिहाद है और इस जिहाद करने वाले को अल्लाह जन्नत देगा। इस तरह योजना बद्ध तरीक़े से इस्लाम को बदनाम करने के लिए उसे निर्दोषों की हत्या कराने वाला आतंकवादी धर्म घोषित कर दिया गया और जिहाद का मतलब आतंकवाद बताया गया।

.....जारी.....

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः क्या शार्क *(Shark)* मच्छली जो एक क़िस्म की खूनी मच्छली कही जाती है जो बाज मर्तबा इंसानों और जानवरों को भी खा जाती है क्या उसका खाना हलाल है?

उत्तरः शार्क भी एक क़िस्म की मच्छली है इसलिए निःसंकोच खाना हलाल व जायज़ है किसी जानवर या इंसान का शिकार करने की वजह से हराम व नाजायज़ न होगी। सहाब–ए–किराम का अंबर नामी बहुत बड़ी मच्छली का खाना हदीसों से साबित है, वह इतनी बड़ी मच्छली थी कि 250 सहाब–ए–किराम ने तकरीबन दो महीने तक उसका गोश्त खाया।

प्रश्नः एक व्यक्ति के रूपये बैंक में जमा थे, उसने बैंक को यह लिख कर दे दिया कि मेरे इंतेक़ाल के बाद यह रूपये मेरी बीवी के होंगे, उस व्यक्ति का इंतेक़ाल हो गया लेकिन बीवी के साथ माँ भी ज़िन्दा है, क्या बैंक में जमा रूपये में माँ का भी हिस्सा होगा या कुल जमा रक़म बीवी को ही मिलेगी?

उत्तरः अगर किसी व्यक्ति ने अपने रूपये बैंक में जमा किया और बीवी के हक़ में तहरीर भी बैंक को लिख कर दे दी, तब भी पूरी जमा राशि बीवी का हक़ नहीं होगा, बल्कि वह जमा राशि मरने वाले के अन्य छोड़े मालों में शामिल होगी, औलाद न होने की सूरत में बीवी को एक चौथाई और माँ को एक तिहाई का हक होगा। (फतावा हिंदिया 6/449)

प्रश्नः क्या खून को खरीदना और बेचना जायज़ है? न मिलने की सूरत में दान करना, या दान में न मिलने की सूरत में खरीदना जायज़ है?

उत्तरः इन्सानी शरीर के किसी भी भाग को खरीदना व बेचना जायज़ नहीं है, लेकिन किसी व्यक्ति की जान बचाने के लिए दान में खून न मिल सके तो मजबूरन खरीदने की इजाज़त होगी लेकिन पैसे ले कर बेचना शरीयत में जायज़ नहीं, हाँ किसी की जान बचाने के लिए दान में देना सही है।

(अल–मबसूत–15/127)

प्रश्नः क्या पूरे साल का वेतन तय करना और एडवांस में एक मुश्त रकम लेना सही है? जैसे कंपनी वाले पूरे साल की सैलरी पैकेज की सूरत में तय कर देते हैं और किसी माहिर व्यक्ति को उस पर रख लेते हैं, क्या साल भर की सैलरी एडवांस ले लेना दुरुस्त है, जब कि अभी उसने काम भी नहीं किया है?

उत्तरः जिस प्रकार माहाना सैलरी का मुआमला सही है इसी प्रकार साल भर में एक मुश्त और एडवांस लेना सही है, अल्लामा ज़ैलई रह0 ने इसको दुरुस्त करार दिया है।

(तब्यीनुल हक़ाइक़ः 5/123)

प्रश्नः नमाज़ जनाज़ा पढ़ाने या बच्चे की पैदाइश पर कान में अज़ान देने की उजरत लेना कैसा है?

उत्तरः नमाज़ जनाजा पढ़ाने और बच्चे की पैदाइश पर कान में अज़ान देने की उजरत लेना सही नहीं है।

(अल दुर्रुल मुख़्तारः 6/55)

प्रश्नः कुछ लोगों के लिए अपने स्कूल या आफिस में टाई लगाना ज़रूरी होता है ड्यूटी के दौरान नमाज़ का वक़्त आ जाता है, क्या ऐसे लोग टाई पहने हुए नमाज़ पढ़ सकते हैं?

उत्तरः मौजूदा दौर में टाई का प्रयोग उमूमी तौर पर होने लगा है और देखने में आता है कि लोग किसी अक़ीदे और दीनी नज़रिये की बिना पर टाई इस्तेमाल नहीं करते हैं इसलिए अगर नमाज़ की हालत में टाई लगी हुई हो तो इसमें कोई हरज नहीं, नमाज़ अदा हो जायेगी।

❖❖❖

रूह़ की गहराइयों में दर्द का एह़सास है

—मौलाना शब्बीर अहमद जज़्बी कांधेलवी

फिर सुनाऊँ मस्जिदे अक़्सा की बर्बादी का हाल।
दीने हक़ की मिल्लते बैज़ा की बर्बादी का हाल।।

तूने देखा क्या हुआ इस वक़्त ऐ चर्खे कबूद।
जब अचानक हमला आवर हो गये ज़ालिम यहूद।।

सजदा गाहे अंबिया बर्बाद कैसे हो गई।
हाय रुसवा इज़्ज़ते अजदाद कैसे हो गई।।

मश्रिक़े वुस्ता की मिट्टी आज लालाज़ार है।
कुफ्र फिर इस्लाम से आमाद—ए—पैकार है।।

चार सू बहता हुआ फिरता है मुस्लिम का लहू।
मुज़तरिब मुझको नज़र आता है कोई मैं न तू।।

हो गये रुसवा ज़माने में अरब के ताजदार।
यह बहादुर, यह जरी, यह सफशिकन, मैदानेकार।।

इनके हाथों ने उखाड़ी कैसर—ओ—किसरा की जड़।
आज तक जरबुल मसल है उनकी दुनिया में अकड़।।

वह सलाहुद्दीन सुलताँ गाज़िए मिल्लत पनाह।
जिसकी हैबत से हुआ था लश्करे बातिल तबाह।।

ज़ोरे बाजू से पलटता था बिसाते शश जिहात।
उसके आगे सर निगूं रहता था जुअ़मे काइनात।।

क्या बता सकता है कोई मुझको उनकी रुसवाई का राज़।
तुझ से पोशीदा नहीं है मेरे दिल का सोज़—ओ—साज़।।

मुज़तरिब हूँ मैं दिले बेताब मेरे पास है।
रूह़ की गहराइयों में दर्द का एह़सास है।।

यूँ बिसाते ज़िन्दगानी पारः पाराः क्यों हुई।
उनकी ज़िल्लत गैरते हक़ को गवारा क्यों हुई।।

मुँह छुपाने की जगह दुनिया में अब बाक़ी नहीं।
जान कोई मिल्लते वुस्ता में अब बाक़ी नहीं।।

खुल नहीं सकता यह उक़्दा नाखुने तदबीर से।
हल निकल सकता है जज़्बी परद—ए—तक़्दीर से।।

❖❖❖

कामयाब ज़िन्दगियाँ

शमीम इक़बाल खाँ

कुरआन के अहकामात और हुज़ूर अक़दस(स0अ0व0) की तअ़लीमात के मुताबिक ज़िन्दगी गुज़ारना ही हमारी दीनी ज़िम्मेदारी है. इस ज़िम्मेदारी की अदायगी के लिये बहुत ज़्यादा मेहनत व मशक़्क़त की ज़रूरत नही है. हुकूकुल्लाह और हुकूक़ .–उल–इबाद अदा करना ही अल्लाह के अहकामात और उसके रसूल(स0अ0व0) की तअ़लीमात का खुलासा है. हमारा ईमान मुस्तहकम होना चाहिए, नमाज़, की पाबन्दी होनी चाहिए, रोज़ा बीमार लोगों पर फ़र्ज नहीं है इसी तरह हज और ज़क़ात से ग़रीबों को अल्लाह तआला ने बरी कर रखा है लेकिन हुकूकुलइबाद की अदायगी में हर अमीर, ग़रीब, बीमार व तन्दुरुस्त की यकसाँ ज़िम्मेदारी है इसमें किसी तरह की रिआ़यत किसी के लिये नहीं है। हराम व हलाल के फ़र्क़ को अगर पहचान लिया जाये तो हुकूक़–उल–इबाद की अदायगी बहुत आसान हो जाये। हराम व हलाल की समझ और झूठ से परहेज़ का एहतिमाम, नमाज़ की पाबन्दी के साथ किया जाता है तो समझ लेना चाहिए कि अल्लाह का इनआम हमें मिल रहा है इसी लिये हमारी गाड़ी सही पटरी पर चले जा रही है।

हज़रत अबूहुरैरह(रजि.अ.) से रिवायत है कि हुज़ूर अकदस(स0अ0व0) ने इरशाद फ़रमाया कि तीन ख़सलतें ऐसी हैं जो मुनाफ़िक़ होने की निशनी हैः– (1) झूठ बोलना, (2) वादा खिलाफ़ी करना (3) अमानत में ख़यानत करना। इन खसलतों को बरतने वाला अपने को मुसलमान कैसे साबित करेगा?

हमें अपनी कमज़ोरियों और बुराइयों पर नज़र रखनी है और साथ ही साथ अपने कुर्ब–जवार की बुराइयों पर भी नज़र रखनी है क्योंकि हुज़ूर अक़द(स0अ0व0) ने फ़रमाया कि जो कोई तुम में से किसी बुरी बात को होते देखे तो चाहिए कि उसको अपने हाथों से मिटा दे. अगर ऐसा न कर सके तो ज़बान से ही मना कर दे और जब इसकी भी कुदरत न हो तो दिल से ज़रूर बुरा जाने. यह ईमान का सब से कमज़ोर दर्जा है।

आप(स0अ0व0) ने फ़रमाया कि तुम लोग आपस में एक दूसरे को अच्छी बातों के करने का हुक्म करो और बुरी बातों को करने से रोको वर्ना ऐसे अज़ाब में गिरफ़्तार होगे जो हज़ारों दुआऐं मांगने से भी दफ़्आ न होगा और दुआएं सब नामक़बूल होंगी।

बुराई को देख कर उसको रोकने की कोशिश न करना और न ही नागवारी ज़ाहिर करना ऐसा ही है जैसे उस बुराई को खुद किया हो। जैसा कि हुज़ूर अक़दस(स0अ0व0) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला कभी बाज़ लोगों की बदआमाली से सारी क़ौम को अज़ाब में मुब्तला नहीं करता मगर उस वक़्त जब लोग बुराई को रोकने की ताक़त रखने के बावजूद भी उन्हें नहीं रोकते तब अलबत्ता आम और ख़ास सब ही अज़ाब में गिरफ़्तार हो जाते हैं।

(मिश्क़ात शरीफ़ स0634)

मरने के बाद की ज़िन्दगी दुनिया के आमाल और इबादात पर मुनहसिर है। मरने के बाद की ज़िन्दगी का सफ़र न खत्म होने वाला है और उस सफ़र का ख़र्च दुनियावी जिन्दगी में कमा कर ले जाना है। यह एक फ़िक्र वाली बात है कि इस छोटी सी जिन्दगी में हम आखिरत के लिये कितना बचा कर ले जा सकते हैं। यह उसी वक्त मुमकिन है कि सुब्ह बिस्तर से उठने से लेकर रात में बिस्तर पर जाने तक हर अमल अल्लाह और रसूल के अहकामात के मुताबिक हो।

इन बातों पर अक्सर लोग कह उठते हैं ''अरे! इतना कहाँ हो सकता है''।

यह सोचने की बात है कि

यह एक छोटा सा जुम्ला कह कर हमने अपना ईमान तज दिया। यह सीधे–सीधे अल्लाह और रसूल(स0अ0व0) के अहकामात का इनकार हुआ जबकि हुक्म यह है कि ''पूरे के पूरे ईमान में दाख़िल हो जाओ''।

हुज़ूर अक़दस(स0अ0व0)ने फ़रमाया कि उम्मत की पहली सलाहियत यह है कि उसको आख़िरत का यक़ीन हो और दुनिया की परहेज़गारी मुयस्सर हो और उसकी पहली ख़राबी यह है कि कंजूसी और उम्मीदें बहुत ज़्यादा हों।

(मिश्क़ात शरीफ़ स. 450)

फ़क़ीह अबुललैस(रजि.अ.) ने फ़रमाया कि:–

जिस की उम्मीदें कम होती हैं अल्लाह तआला उनको चार बुजुर्गियां अता फ़रमाते हैं:–

(1). उसे फ़रमाबरदारी और इबादत पर मज़बूत करते हैं।
(2). उसके ग़म कम होते हैं.
(3). वह थोड़े पर क़नाअत करता है।
(4). उसका दिल मुनव्वर होता है।

दिल चार बातों से मुनव्वर होता है:–

(1). भूखा रहने से (कम खाने से)।
(2). नेक लोगों की सोहबत से।
(3). पिछले गुनाहों को याद रखने से।
(4). उम्मीदों के कम होने से।

जिनकी उम्मीदें ज़्यादा होती हैं अल्लाह तआला उनको चार बातों में मुब्तला करते हैं:–

(1). इबादत में सुस्ती व काहिली।
(2). दुनिया में ग़मों की ज़्यादती।
(3). माल जमा करने की हिर्स।
(4). क़ासावत–ए–क़लबी यानी संगदिली।

क़सावत–ए–क़लबी यानी संगदिली चार बातों से पैदा होती है:–

(1). पेट भर खाने से।
(2). बुरी सोहबत से।
(3). पिछले गुनाहों को भूल जाने से।
(4). उम्मीदों के बहुत होने से।

इसलिये मुसलमानों को चाहिये कि वह ज़्यादा उम्मीदों में न फसें कि न मालूम किस दम और किस क़दम में ही दमे–आख़िरत आ जाये और मौत को भी अक़्सर याद रखें कि इसके भी फ़वायद बहुत हैं।

(तम्बीहउलग़ाफ़लीन स:76)

हदीस में है कि चार चीजें ऐसी हैं कि जिसे मिल गईं उसको दुनिया व आख़िरत की ख़ैर मिल गई:–

(1) शुक्र करने वाला दिल।
(2) ज़िक्र करने वाली ज़बान।
(3) मुसीबत पर सब्र करने वाला बदन और
(4) ऐसी बीवी जो न अपने नफ़्स में ख़्यानत करे (यानी पाक दामन रहे) और न शौहर के माल में

(तबरानी, अलज़्वायद स–369)

घर वालों पर ख़र्च करने का अज्र:–

हज़रत अबुहुरैरह(रजि.अ.) से रिवायत है कि हुज़ूर अक़दस(स0अ0व0) ने फ़रमाया कि एक दीनार तुम ने अल्लाह के रास्ते में खर्च किया, एक दीनार गर्दन के आज़ाद करने में (यानी क़र्ज़ वग़ैरह के अदा करने मे), एक दीनार मिस्कीनों पर सदक़ा किया और एक दीनार घर वालों पर ख़र्च किया, सो जो दीनार घर वालों पर ख़र्च किया उसका दर्जा सब से ज्यादा है।

(मुस्लिम)

हज़रत सौबान मौला रिवायत करते हैं कि हुज़ूर अक़दस(स0अ0व0) ने फ़रमाया 'अफ़ज़ल तरीन दीनार वह है जिसे आदमी अपने घर वालों पर ख़र्च करे और उन जानवरों पर खर्च किया जाये जो अल्लाह के रास्ते में काम आयें और वह दीनार जो अल्लाह के रास्ते में अपने साथियों पर ख़र्च किया जाये।

(ज़ाद–ए–सफ़र स 177)

हुज़ूर अक़दस(स0अ0व0) ने फ़रमाया:– मोमिन के मरने के बाद उसकी कुछ नेकियों का सवाब मिलता रहता है वह यह हैं–

(1) किसी को दीन की तअलीम। दी और उसे फैलाया।
(2) नेक लड़का या लड़की छोड़ी(जो उसके लिये दुआ करेगा)।
(3) कुरआन किसी को दिया।
(4) मस्जिद बनवा दी।
(5) मुसाफ़िर ख़ाना बनवाया (इसमें अर्बी दर्सगाहों में दारुलअक़ामा की तअमीर भी दाख़िल है)।

शेष पृष्ठ ....40.....पर

–पिछले अंक से आगे.....

घरेलू मसायल

मौलाना मुहम्मद बुरहानुद्दीन सम्भली रह0

अनुवादः मौ0 मु0 जुबैर अहमद नदवी

औरत और मर्द के हिस्से में फ़र्क:-

वरासत की तकसीम के शरई नियम में जिस तरह ''कौन कितना करीब है'' ये अहम नियम है, इसी तरह अक़्सर हालात में मर्द को औरत से दो गुना हिस्सा मिलना भी एक बुनियादी नियम है, और पहले की तरह ये भी सिर्फ ''कयास'' से साबित, या इख़्तिलाफ़ मसला नहीं है, बल्कि कुरआन मजीद में आयत मौजूद हैः–

अनुवादः– ***''औरत के मुक़ाबले में मर्द का दोहरा हिस्सा है।'' (सूरह निसा– 11)***

आज कल औरत मर्द के बीच बराबरी का नारा बहुत जोरो शोर से लगाया जा रहा है, (हक़ीक़त से पाठक अच्छी तरह वाकिफ हो चुके हैं) ''कुछ दूसरे इस्लामी हुक्मों की तरह, इन नारेबाजों को इस हुक्म में भी ''ना बराबरी'' नज़र आई, बस फिर क्या था, चिल्लाना शुरू कर दिया कि ''शरीयत का कानून–ए–विरासत सरासर जुल्म पर आधारित है, लिहाजा इसे बदल देना चाहिए।

ये नारा नया नहीं है, जाहिलियत के जमाने में भी कुछ दिमाग इस तरह सोचते थे, जैसा कि तफ़्सीर रूहुल मआनी से मालूम होता है, कि जब कुरआन मजीद में विरासत के विस्तृत आदेश नाजिल हुए, और उस में औरतों का हिस्सा अक्सर हालात में आधा रखा गया औरतों ने कहा ''हम इस बात के ज़्यादा हकदार हैं कि हमें दो हिस्से मिलें और मर्दों को एक हिस्सा इसलिए कि हम कमजोर हैं और वो ताक़तवर।'' इस पर नाजिल हुई–

अनुवादः– ''और तुम उस चीज की तमन्ना न करो जिससे अल्लाह ने तुम में से एक दूसरे पर फजीलत दी है।
(रुहुल मआनी, जिल्द 5, पृष्ठ– 16)

इसके अलावा किसी भी कानून के सिर्फ एक पक्ष को सामने रखने से उसके सही या गलत होने का फैसला करना सही नहीं होता। जब तक सारे पक्ष सामने ना हों उस वक्त तक सही नतीजे तक पहुंचना मुम्किन नहीं होता, लिहाजा इसी क़ानून (विरासत) के साथ शरीयत के दूसरे कानून भी सामने रहें तो एतेराज़ की गुंजाईश ख़त्म हो जाए, मसलन औरत पर शरई क़ानून के मुताबिक अक़्सर हालात में कोई खर्च यहां तक कि उसका अपना ख़र्च भी जरूरी नहीं होता, (तफ़्सील इसी किताब में आ गई है) और ये बात भी है कि निकाह से औरत महर की हक़दार भी होती है, जो आमतौर पर एक बड़ी रकम होती है, मर्द पर निकाह के बाद दोहरी तेहरी जिम्मेदारियाँ आयद हो जाती हैं। परिस्थिति को समझने के लिए ये मिसाल शायद फायदेमंद हो, एक शख़्स का इन्तिक़ाल हो गया, उसने एक लड़का और एक लड़की वारिस छोड़े और तीस हजार रुपये विरासत में छोड़े, इस्लामी कानून–ए–विरासत के मुताबिक इस सूरत में लड़के को बीस हजार रुपये और लड़की को दस हजार रुपये, मिले, अब मान लीजिये उन दोनों की शादियां हुईं और हर एक का महर दस दस हज़ार रूपये तय हुआ, इस सूरत में लड़के के पास अपनी बीवी को महर देने के बाद दस हज़ार रुपये रह गए और लड़की के पास उसको शौहर से महर बाद बीस हज़ार रुपये रह गये, और इससे आगे बढ़ कर ये की लड़की पर कोई ख़र्च ज़रूरी नहीं जिस पर वो ये रुपये ख़र्च करे, इस के उल्टा लड़के पर

उसका अपना निजी ख़र्च और बीवी (और अगर बच्चे हुए तो) उनका भी ख़र्च, इस तरह बाकी दस हज़ार रूपये भी जल्द ख़त्म होने की संभावना है, जब कि लड़की के पास विरासत से दस गुनी रकम उसी तरह रह गई। समझदारों के लिए ये मिसाल काफी है।

पिछले पृष्ठों में बहुविवाह की बहस के दौरान इस नारे की हकीकत और "जुल्म" के इलजाम को पूरे तौर पर बेनकाब किया जा चुका है, अब कुछ और कहने की ज़रूरत बिल्कुल मालूम नहीं होती, सिर्फ़ इतना इजाफ़ा बेजा न होगा कि इस आपत्ति की भी असल वजह वही है जो वहां बयान हुई, यानी इस्लामी क़ानूनों के सभी पक्षों का आपत्ति करने वालों के सामने न होना, वरना मालूम होना चाहिए था कि औरत को विरासत की जो मात्रा भी मिल रही है, वो शायद कभी किसी आकस्मिक ज़रूरत में काम आती हो, तो आ जाती हो, वरना अक्सर रखी ही रहती है, और बैंक बैलेंस बढ़ाने का सबब बनती है, इसलिए ये समझाना शायद बेजा न होगा कि शरीयत ने विरासत में उसका हिस्सा निर्धारित करके दरअसल उसका दिल खुश किया है और मान बढ़ाया है, और समाज में उसका मर्तबा बढ़ाया है। (विवरण के लिए देखिये, हज़रत शाह वलियुल्लाह साहब रह० की किताब "हुज्जतुल्लाहिल बालिगह" जिल्दः 2, पृष्ठ 89) वरना शरई कानूनों का विस्तृत मालूमात रखने वाला, हर शख़्स जानता है कि शरई कानूनों पर मुकम्मल तौर से अमल करने की सूरत में औरत के सामने कोई भी चरण कुछ अपवाद और मज़बूरी की हालतों को छोड़ कर ऐसा नहीं आता, जिसमें किसी के ख़र्चे का यहां तक कि खुद अपने ख़र्चे का भी शरीयत के ऐतबार से बोझ उठाना पड़ता हो क्योंकि शादी से पहले बाप, या भाई वगैरह पर, शादी के बाद पति पर तलाक़ या पति के इंतेक़ाल के बाद औलाद या दूसरे क़रीबी रिश्तेदारों वगैरह पर उसका खर्चा शरीयत के एतेबार से लाजिम है, जिसकी पूरी तफ़्सील हदीस व फिक़्ह की किताबों में मौजूद है।

(देखिये शामी, जिल्द– 2, पृष्ठः 672)

और ये बात और भी आगे की है कि वो निकाह करती है तो शौहर से महर भी लेने की हकदार बनती है, क्योंकि महर देना शौहर के जिम्मे लाजिम कर दिया गया है, ये खुद ही अपनी जिहालत या रियायत से ना ले (बल्कि माफ कर दे) तो ये और बात है, शरीयत का असल क़ानून यही है कि ऐसा नहीं होता, जिसमें असलन शुरू में या बाद में महर ज़रूरी न होता हो, जैसा कि ऊपर बार बार गुजरा कि शादी के वक़्त औरत पर कोई खर्च नहीं बल्कि सारे खर्चे शौहर पर ही हैं, इस बारे में इमाम गज़्जाली (रह०) ने (एहयाये उलूमिद्दीन, जिल्दः 2, पृष्ठः 37) मशहूर महान ताबेयी हज़रत सुफ़्यान सौरी का अजीब क़ौल लिखा है कि "अगर कोई शख़्स निकाह के वक़्त या उससे पहले ये कहता है "औरत के पास कुछ है भी?" तो वो चोर है। इससे आगे ये कि वो शौहर के इंतेक़ाल के बाद उसकी विरासत पाने की भी हक़दार होती है, इसके उल्टा मर्द की हालत ये है कि बालिग होने की उम्र और कामने की ताक़त ही न सिर्फ अपनी बल्कि दूसरों (मसलन, बीवी, कुछ हालतों में माँ बाप, और दूसरे संबंधी भी) की ज़रूरतों का पूरा करना भी अक्सर हालात में उसके जिम्मे हो जाता है, और शादी कर लेने के बाद, न सिर्फ ये कि बीवी के सारे ख़र्चे ही उसके जिम्मे बिना किसी दूसरे के शरीक हुए ज़रूरी होते हैं, बल्कि महर की रक़म का, जो अक्सर बड़ी रक़म होती है, उस पर ज़रूरी होता है, इन पहलुओं के आ जाने के बाद, औरत को अगर चौथाई हिस्सा भी मिला करता तब भी शायद जुल्म का लफ़्ज़ उसके लिए सही न होता।

❖❖❖

शिक्षा और मानसिक स्वास्थ्य

अबु मु0 आमिर नदवी

शिक्षण संस्थानों में परीक्षा की तैयारी करने में छात्रों पर काफी मानसिक तनाव रहता है और कभी–कभी इस तनाव के परिणाम भयानक रूप में अभिभावकों के सामने आते हैं। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एन0पी0आर0बी0) के अनुसार 2021 में लगभग 13,000 स्नातक छात्रों ने आत्महत्या का प्रयास किया। एन0सी0आर0टी0 के 2022 के सर्वेक्षण में पाया गया कि कक्षा 9 से 12 तक के 81 प्रतिशत छात्र पढ़ाई और परीक्षा को लेकर मानसिक तनाव से पीड़ित हैं। छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य के संबंध में इस चिंताजनक समस्या पर ध्यान और कार्यवाई की आवश्यकता है। इसके लिए नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूरोसाइंसेज *(NIMHANS)* हर 2 घण्टे की पढ़ाई के बाद 10–15 मिनट की नियमित अंतराल के साथ खनिजों से भरपूर संतुलित आहार के सेवन की सलाह देता है।

तद्नुसार, केवल 10 प्रतिशत छात्र ही इन महत्वपूर्ण चीज़ों का एक संरचित कार्यक्रम बनाते हैं। प्रबंधन से तनाव कम किया जा सकता है। इसलिए सुनिश्चित करें कि आपको सही मात्रा में पोषक तत्व मिल रहे हैं जो आपके मानसिक स्वास्थ्य के लिए अच्छे हैं। जिन विद्यार्थियों से हमारा सामना हुआ उनमें से 87 प्रतिशत को संतुलित नींद नहीं मिली। नींद की कमी कई प्रकार की समस्याओं को जन्म देती है जिसमें मानसिक तनाव भी शामिल है।

जिसमें कमज़ोर सामाजिक समर्थन प्रणाली भी शामिल है। हालांकि इस समस्या में एकाग्रता का बड़ा महत्व है लेकिन केवल 12 प्रतिशत पेशेवर ही एकाग्रता में मदद करते हैं। ध्यान करने के लिए भी समय निकालें। अपने मन को यह स्वीकार कराएं कि आप अपना लक्ष्य हासिल कर सकते हैं। उसी तरह विशेष रूप से आपके मानसिक स्वास्थ्य और जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए, सीखने की प्रक्रिया में विफलताएं और गलतियाँ अक्सर परीक्षा की तैयारी में छात्रों द्वारा हो सकती हैं यह बात स्वीकार करना चाहिए।

किसी व्यक्ति की शिक्षा और प्रशिक्षण में मानसिक स्वास्थ्य की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। लेकिन आज के युग में आधुनिक संसाधन संचार के प्रसार के साथ, शिक्षा के साधन के रूप में प्रौद्योगिकी का उपयोग बहुत आम हो गया है और शिक्षा की पारंपरिक पद्धति का स्थान ऑनलइन कक्षाओं ने ले लिया है जिससे विद्यार्थी समाज और अपने आसपास के वातावरण से कट जाते हैं जिससे वो खुद को समाज से अलग थलग महसूस करने लगते हैं और मायूसी का शिकार हो जाते हैं और इसी के साथ व्यावसायिक शिक्षा में प्रतिस्पर्धा के कारण भी मानसिक रूप से शिक्षा का तनाव दिन– ब–दिन बढ़ता जा रहा है, यहाँ तक कि एक रिपोर्ट के मुताबिक यह मानसिक तनाव आत्मघाती है।

मानसिक स्वास्थ्य में हमारा भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कल्याण शामिल होता है। यह हमारे सोचने, समझने, महसूस करने और कार्य करने की क्षमता को प्रभावित करता है। गौरतलब है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन *(WHO)* अपनी स्वास्थ्य की परिभाषा में शारीरिक स्वास्थ्य के साथ–साथ मानसिक स्वास्थ्य को भी शामिल करता है।

इस समस्या की जागरूकता के लिए विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस 10 अक्तूबर को दुनिया भर में मनाया जाता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन का कहना है कि दुनिया भर में 45 करोड़ लोग किसी न किसी तरह के मानसिक विकार से पीड़ित हैं। जिनमें सबसे आम मानसिक बीमारियाँ डिप्रेशन और सिज़ोफ्रेनिया है। 2002 में अनुमान लगाया गया था कि दुनिया भर में 154 मिलियन से अधिक लोग

डिप्रेशन से पीडित हैं। जबकि दुनिया भर में लगभग एक प्रतिशत लोग किसी न किसी समय सिज़ोफ्रेनिया से पीड़ित रहे हैं, संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, दुनिया भर में चार में से एक व्यक्ति को किसी न किसी प्रकार की मानसिक स्वास्थ्य देखभाल की आवश्यकता है। जबकि विकासशील देशों में 85 प्रतिशत तक लोगों को मानसिक बीमारियों के इलाज तक कोई पहुँच नहीं है। वहां मानसिक बीमारी को शर्मनाक माना जाता है।

आशा और निराशा व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती हैं। डिप्रेशन से पीड़ित लोगों को अपने आसपास के निराशाजनक अंधेरे में आशा की कोई किरण नज़र नहीं आती। लेकिन इस्लाम ने अपने अनुयायियों के लिए हर स्थिति में सर्वशक्तिमान ईश्वर पर विश्वास रखना आवश्यक बना दिया है। पवित्र कुरआन में कहा गया है'–

''अल्लाह की दया से निराश न हो केवल अविश्वासी ही उसकी दया से निराश होते हैं'' (सूरः युसूफ–8:7)।

कुरआन कहता है कि '***''नकारात्मक भावनाओं का मुकाबला सकारात्मक विचारों और कार्यों से करें'' तो वास्तव में हर कठिनाई के साथ राहत है। वास्तव में हर कठिनाई के साथ राहत है।''***

(सूरः अलमनशरह– 5:6)

❖❖❖

जुल्म का अंजाम

–अब्दुल रशीद सिद्दीक़ी नसीराबादी

जुल्मों सितम का करना, अच्छा नहीं होता।
जुल्म का अंजाम भी अच्छा नहीं होता।।

जालिम की नहूसत से, मरते हैं परिंदे भी।
मखलूक़ को सताना, अच्छा नहीं होता।।

दुनिया के चौधरी की, आँखें भी बन्द इस दम।
ज़ालिम का साथ देना, अच्छा नहीं होता।।

हिन्दू हो मुसलमान हो, ईसाई कि यहूदी।
किसी का खून करना अच्छा नहीं होता।।

बच्चों पे बम धमाका, बूढ़ों पे जुल्म करना।
अबला को क़त्ल करना, अच्छा नहीं होता।।

मालिक है एक सबका, हम सब उसी के बन्दे।
बन्दों पे जुल्म ढ़ाना, अच्छा नहीं होता।।

मुजरिम को सज़ा देना, अल्लाह जानता है।
स्वयं कहेर को बुलाना, अच्छा नहीं होता।।

मस्जिद ख़ुदा का घर है, यह बात अयाँ है।
मस्जिद को ढहा देना, अच्छा नहीं होता।।

हाथियों का लश्कर, भुस हो गया पल भर में।
दुश्मन ख़ुदा का बनना, अच्छा नहीं होता।।

सिद्दीक़ी की तमन्ना दुनिया में अम्न फैले।
नफ़रत की आग बोना अच्छा नहीं होता।।

❖❖❖

नदवतुल उलमा में तीन दिवसीय फ़िक़्ही सेमिनार

इदारा

यह तीन दिवसीय सेमिनार शोब–ए–तहक़ीक़ात शरीअः की ओर से 20,21,22 अक्तूबर, 2023 को नाजिम नदवतुल उलमा मौलाना सय्यद बिलाल हसनी नदवी की अध्यक्षता में आयोजित हुआ, जिस में देश भर के बड़े उलमा ने शिरकत की, इस सेमिनार में निम्नलिखित शीर्षक थे जिन पर उलमा को ग़ौर करना था और निर्णय लेना था।

1. सार्वजनिक जगहों पर नमाज़ का मसला।
2. मस्जिदों में औरतों का नमाज़ के लिए आना।
3. सोने चाँदी के जेवरात की ज़कात का निश्चित निसाब और एक की दूसरे से पूर्ति।

मौलाना बिलाल हसनी नदवी ने अपनी सदारती तक़रीर में फ़रमाया– आज हर तरफ़ बिगाड़ है, मुश्किल हालात और चुनौतियों का सामना है, इसके लिए उलमा अपनी ज़िम्मेदारी अदा करें, ज़माना बड़ा परिवर्तन शील है, नये मसायल तेज़ी के साथ फैल रहे हैं, उन मसायल का हल पेश करना उलमा की ज़िम्मेदारी है उलमा और फ़ुक़्हा (धर्म शास्त्री) के लिए ज़रूरी है कि वह अपनी नज़र में वुसअत और व्यापकता पैदा करें और गौर व फ़िक्र के दायरे को विस्तार दें।

मजलिस तहक़ीक़ाते शरीअः के सिक्रेट्री मौलाना अतीक़ अहमद बस्तवी ने अपना मौलिक व्याख्यान पेश किया उन्होंने कहा नये नये पेश आने वाले मसायल में सामूहिक इजतिहाद का सिलसिला प्राचीन काल से चला आ रहा है। शरई दलाएल की रोशनी में नये मसायल को हल करना बहुत नाज़ुक और बहुत ज़िम्मेदाराना अमल है, यह काम उन्हीं ख़ुदा तरस, ज़माना शनास उलमा और फ़ुक़्हा का है जिनकी शरई दलायल पर गहरी और विस्तृत नज़र और जिनके अन्दर मसायल को समझने की भरपूर सलाहियत हो, इस तीन दिवसीय फ़िक़्ही सेमिनार में उक्त शीर्षकों पर लम्बी इल्मी बहस हुई और अहम प्रस्ताव पास हुए।

सार्वजनिक जगहों पर नमाज़ के मसले पर तय हुआ कि नमाज़ कम समय में शान्ति पूर्ण अदा की जाने वाली इबादत है इसलिए सार्वजनिक स्थानों पर क्षमता के अनुकूल नमाज़ अदा करें। ख़्याल रखें कि नमाज़ से किसी को तकलीफ़ न पहुँचे, यदि नमाज से कष्ट पहुँचने का अन्देशा हो तो नमाज़ विलंवित करने की गुनजाइश है।

औरतों के मस्जिद आने पर प्रस्ताव में तय हुआ कि औरतों का घर में नमाज़ पढ़ना अफ़ज़ल है लेकिन शर्तों के साथ मस्जिद में आने की इजाज़त है, आम जगहों पर तामीर होने वाली नई मस्जिदों में औरतों के लिए अलग गोशा ख़ास करना मुनासिब है।

इसी तरह सोने चाँदी के निसाब के मसअले पर भी बहस हुई, प्रस्तुत प्रस्ताव में कहा गया कि हदीस के मुताबिक़ बीस मिसक़ाल सोना और दो सौ दिरहम चाँदी का निसाब क़रार दिया गया यानी जिस शख़्स की मिलकियत में 87 ग्राम 480 मिली ग्राम सोना या फिर 612 ग्राम 360 मिली ग्राम चाँदी होगी उन पर ज़कात वाजिब होगी, तिजारती माल और कैश करन्सी पर भी ज़कात ज़रूरी है। अलबत्ता उनका निसाब जमहूर फ़ुक़्हा की वज़ाहत के मुताबिक यही है जिसकी ताईद सेमिनार में शामिल लोगों की बड़ी तादाद ने की, लेकिन सेमिनार में शरीक होने वाले उलमा की बहुसंख्यक यह राय भी रखती है कि तिजारती माल और कैश करन्सी सोने ही के निसाब की क़ीमत को पहुँचने पर ज़कात ज़ारी होगी, निसाब से कम मिक़दार में सोना चाँदी को मिलाने की गुनजाइश है, मिलाने से निसाब पूरा हो जाता है तब ज़कात लाज़िम हो जाती है वरना नहीं।

इस तीन दिवसीय फ़िक़्ही सेमिनार में सौ से ज़्यादा उलमा, मुफ़तियान किराम रिसर्च स्कालर शरीक हुए। ◆◆

युद्ध समस्या का समाधान नहीं

नौशाद खान

जंगों का अपना एक बहुत बड़ा इतिहास है मानव जाति की उत्पत्ति से ही युद्ध प्रारंभ हो चुका था. कभी यह जंग स्त्री के लिए, कभी धर्म, कभी भूमि, कभी जातिवाद, कभी राष्ट्रवाद, तो कभी ऊंच नीच,कभी गुलामी, कभी शांति स्थापना के लिए होती रही और इस प्रकार के कई कारण हैं जिनकी वजह से जंगें हुईं लेकिन उपरोक्त कारणों के परिणाम कभी सही नहीं निकले। हमेशा दोनों तरफ़ की सेना को जनहानी झेलना पड़ी और जिन्होंने शांतिपूर्वक एकत्रित होकर युद्ध को सुलझाना चाहा वह इससे महफूज रहे। उड़ीसा का प्रसिद्ध कलिंग युद्ध इसका बेहतरीन उदाहरण है जब सम्राट अशोक ने कलिंग के राजा चौत्रराज को लिखा कि मौर्य को राज्य सौंप दिया जाए लेकिन कलिंग राजा ने उनका प्रस्ताव स्वीकार न किया तो फिर सम्राट अशोक ने उन पर चढ़ाई कर दी भुवनेश्वर में दया नदी के किनारे यह युद्ध लड़ा गया जिसमें लगभग तीन लाख सेना का रक्तपात हुआ जिसने अशोक को यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि इतना खून बहा कर कोई उचित परिणाम नहीं निकला, कितनी ही महिलाएं विधवा हो गईं ,कितने बच्चे यतीम हो गए, और आबादियां उजड़ गईं, इस रक्तपात से प्रभावित हो कर सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया और सदैव अहिंसा के मार्ग पर चलते रहे। जब हम जंगो का इतिहास पढ़ते हैं तो हमारी आत्मा भीतर से कांप जाती है. जैसे मंगोलों के अत्याचार, कहते हैं कि उन्होंने 18 लाख मुसलमानों का रक्तपात किया और उनकी खोपड़ियों के मीनार बनवाई और इतनी तबाही और अत्याचार फैलाया कि आज भी उसके जुल्म अत्याचार और अन्याय के उदाहरण दिए जाते हैं। इसी तरह कौरव पांडवों का युद्ध, कहते हैं की मात्र 18 दिन के युद्ध में सवा करोड़ इंसानों का रक्तपात किया जो की दुनिया को वीरान कर देने वाला युद्ध कहलाता था। इसी प्रकार हिरोशिमा की बमबारी में 2 लाख, पहले विश्व युद्ध में चार करोड़, दूसरे विश्व युद्ध में 12 करोड़, लोगों ने जान गंवाई। मंगोलों ने कम से कम 60 मिलियन लोगों को मौत के घाट उतारा, और इन्हीं के डर से एक लाख चीनी लोगों ने सामुदायिक आत्महत्या की थी, मंजू साम्राज्य में मिंग शाही खानदान पर किंग शाही खानदान को जीत दिलाने के लिए 60 साल जंग जारी रही जिसमें 25 मिलियन लोगों ने जान गंवाई. नेपोलियन के हमलों ने 65 लाख लोगों को मौत के घाट उतारा. इसी प्रकार खाड़ी का युद्ध, वियतनाम कोरिया के युद्ध, ये तो करीब की जंगें हैं जिनमे हजारों नही लाखों करोड़ों लोगों ने जानें गंवाई और भी ना मालूम कितने ही युद्ध हैं जिनका लिखना कठिन है. और यह सारे युद्ध भूमि, राज्य, शक्ति को प्राप्त करने के लिए हुए. मानव जाति अपने स्वार्थ और झूठी मान मर्यादा के लिए और सत्ता के लालच में किस प्रकार मानव जाति का ही नरसंहार करती है. यह स्पष्ट हो चुका है।

छठी शताब्दी इस्लाम के आने से पूर्व संसार की यही दुर्दशा थी लेकिन इस्लाम ने युद्ध का मूल अर्थ समझाया,और सत्य को उजागर किया, युद्ध के नियमों को स्थापित किया, आम जनता को सुरक्षा प्रदान की ,रक्षात्मक युद्ध को बढ़ावा दिया ,एक मासूम के नाहक क़त्ल को पूरी मानव जाति के कत्ल के बराबर घोषित किया, और युद्ध

की अनुमति उस समय दी जब दुश्मन युद्ध करें. और उसमें भी एक निश्चित सीमा से अधिक न जाने की हिदायत की गई ,और अगर युद्ध टाले ना टले तो डट कर शत्रु से मुकाबला करने की अनुमति बल्कि दीक्षा दी गई, बंधकों के साथ बेहतर व्यवहार करने का हुक्म दिया, यहां तक के जंग खत्म हो जाए और सेना को यह दीक्षा दी गई की महिलाओं, बच्चों, पुजारियों, पूजा पाठ के स्थलों, किसी के घरों को, हरे भरे पेड़ पौधों को नुकसान न पहुंचाया जाए। युद्ध दो सेना के बीच में होना चाहिए निर्दोष नागरिकों का नरसंहार युद्ध के नियमों का उलंघन है लेकिन अत्याचारी की आंखों पर हमेशा पट्टी बंधी होती है उसको अपनी जीत के सिवा कुछ नहीं दिखता वह जीत के लिए जंग को अनिवार्य कर देता है वह समझते है कि युद्ध में विजय पाकर राज्य में शांति लायेंगे और निर्माण करेंगे जिसके लिए वह सेना की भावनाओं को उत्तेजित करते हैं उनको भड़काते हैं उनका ब्रेन वाश करते हैं और उन्हें यह समझाया जाता है कि राज्य के निर्माण एवं सुरक्षा के लिए युद्ध अनिवार्य है जिसमें किसी के साथ कोई दया ना की जाए जिसका परिणाम यह होता है की वह लोग अंधाधुंध हमला करते है और रक्तपात करते हैं लेकिन वह यह नहीं जानते की जंग क्या मसअले का हल देगी जंग खुद एक मसअला है।

आज भी वही जालिमाना रक्तपात और नरसंहार फलस्तीन और ग़ाज़ा के लोगों पर हो रहा है अभी तक मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार 12 हजार से ज़्यादा लोगों को मार दिया गया जिनमें अक्सर बच्चे और महिलाएं हैं और ये गिनती बढ़ती जा रही है हॉस्पिटल और एंबुलेंस को भी निशाना बनाया जा रहा है स्कूल और मस्जिदों पर बमबारी जारी है। खाने पीने और दवाओं का संकट बढ़ता जा रहा है। संसार की बड़ी ताक़तें जो मानवता का लवादा ओढ़े हुए हैं चुपचाप तमाशा देख रही हैं। यूनिसेफ की रिपोर्ट के अनुसार हर 10 मिनट में एक बच्चा शहीद हो रहा है और न मालूम कितनी लाशें मलबे में दबी होंगी ये बात दुनिया जानती है की जंग में बच्चे और महिला आबादी के इलाके को कभी शामिल नहीं किया जाता और इंसानी बुनियादी अधिकारों को कभी वॉयलेट नहीं किया जाता लेकिन संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा कमेटी और इंसानियत के ठेकेदार ही अत्याचारियों को खुल के समर्थन दे रहे हैं जो पिक्चर्स सोशल मीडिया के जरिए हम लोगों तक आ रही हैं वो दिल दहला देने वाली हैं वो भी केवल वहाँ की हक़ीक़त का एक चौथाई है। सच्चाई दिखाने वालों को मार दिया जा रहा है कई पत्रकारों को उनके खानदान के साथ मार दिया गया मीडिया रिपोर्ट के अनुसार इजरायल ने मुहम्मद अबू हातिब नामक पत्रकार के घर पर बोंबिंग की जिसमें वो अपने घर के 11 सदस्यों के साथ शहीद हो गए। मुहम्मद अबू हासिरा के घर को निशाना बनाया गया जिसमें वो अपने घर के 42 सदस्यों के साथ शहीद हो गये। अभी तक 40 पत्रकारों को मार दिया गया जो इजरायल गाजा जंग की रिपोर्टिंग कर रहे थे। कहा जा रहा है कि इजरायल ने पहले धमकी देकर जंग की विडियोज वायरल न करने की चेतावनी दी थी। इजरायल खून की होली खेल रहा है और मानव अधिकार के रक्षक केवल निंदा कर रहे हैं और संयुक्त राष्ट्र की तरफ से अभी तक इजरायल के खिलाफ कोई कड़ी कार्रवाई देखने को नहीं मिल रही है बस निंदात्मक बयान जारी हो रहे हैं, मानवीय सहायता नहीं पहुँचाई जा रही है जिससे वो लोग तड़प तड़प कर शहीद हो रहे हैं। लेकन तमाम मानवता के ज़िम्मेदार संगठन चुप्पी साधे हुए हैं। जबकि अधिकतर देशों में जनता धरना प्रदर्शन कर रही है, लेकिन ताक़त के नशे में धुत अंतर्राष्ट्रीय संगठन तमाशा देख रहे हैं।

शेष पृष्ठ ....40....पर

बच्चों का डाइजेशन दुरुस्त रखेंगे ये 5 टॉप फॉरमूले

डॉ0 लोकेश के0 भारती

जब कोई नवजात धरती पर आता है तो कुदरत उसे वे सभी चीज़ें देकर भेजती है जिनसे वह अपना सिस्टम सही तरीके से चला सके। बाकी कुछ चीज़ें उसे बाहर से मिल जाती हैं। उसके लिए माँ का दूध इसी कमी को पूरी करता है। आइए देखते हैं कि एक नवजात से ले कर बड़े हो रहे बच्चों के पाचन तंत्र को दुरुस्त रखने के लिए क्या क्या करना चाहिए–

माँ का दूध और नेचुरल फूड देनाः–

अगर नवजात है तो पहले 6 महीने सिर्फ माँ का दूध ही काफी है। माँ के दूध में वे सभी चीज़ें बच्चे को मिल जाती हैं जो उसके पाचन तंत्र को मजबूत करने के लिए और पोषक तत्वों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए काफी हैं। दरअसल, हमारे पाचन तंत्र का अहम हिस्सा पेट में मौजूद गुड बैक्टीरिया या गुड फ्लोरा है। गुड बैक्टीरिया का बीज भी मां का दूध पीने के दौरान ही बच्चे के पेट में पड़ता है। ये बैक्टीरिया गर्भाशय में 9 महीने के दौरान नहीं पनपते। इसलिए पहले 6 महीने माँ का दूध बहुत अहम है। जब 6 महीने पूरे हो जाएं तो सुपाच्य भोजन की शुरुआत की जाती है। फिर अगले डेढ़ साल यानी कुल मिलाकर 2 साल तक माँ के दूध के साथ भोजन भी चलता है। इस तरह जब बच्चा पूरी तरह अन्न पर निर्भर हो जाता है, वह माँ का दूध पीना बंद कर देता है। तब नेचरल फूड (घर में पका हुआ चावल, दाल, सब्जियां आदि) ही देना चाहिए।

2. *CRAP* देने से बचनाः–

C-Carbonated Drinks: इसमें तमाम तरह के कोला, कोल्ड ड्रिंक्स आदि आते हैं। ये बड़ों से ज़्यादा बच्चों के लिए खतरनाक हैं। इनके सेवन से बच्चों का पाचन तंत्र सही से काम नहीं कर पाता। उनकी इम्यूनिटी पर भी असर पड़ता है।

R-Refined Sugars: इनमें सिंथेटिक फूड शामिल हैं। इसके अलावा आर्टिफशल स्वीटनर भी आता है जो मिठास का असल रूप नहीं है। इसका इस्तेमाल कई तरह के फूड आइटम्स में होता है। ये भी बच्चों की सेहत को बिगाड़ते हैं।

A-Artificial Foods: इसमें कई तरह की टॉफी, चॉकलेट, केक, पेस्ट्री, बिस्कुट आदि आते हैं। वैसे बाजार में मिलने वाली ज़्यादातर टॉफी इसी के तहत आती हैं। बच्चों के लिए इन्हें पचाना मुश्किल होता है।

P-Processed Foods: इनमें ऐसे फूड आइटम्स शामिल होते हैं जिन्हें एक खास प्रोसेस से (जिसमें केमिकल का इस्तेमाल भी शामिल है) उनके असल रूप से बदलकर एक नये रूप में ले आते हैं ताकि स्वादिष्ट बनें। बर्गर, फ्रेंचफ्राई आदि इसी तरह का खाना है। इनसे बचना चाहिए।

3. बच्चों को दें नेचुरल प्रोबायोटिकः–

बच्चों को अगर सर्दी, जुकाम आदि नहीं है तो 2 साल के बाद दही, छाछ, लस्सी आदि दिया जाना चाहिए। ये नेचुरल प्रोबायोटिक हैं। इनसे बच्चों के पेट में मौजूद गुड बैक्टीरिया की संख्या बढ़ती है। दरअसल, कई बार बच्चों के बीमार होने से गुड बैक्टीरिया की संख्या कम हो जाती है। इससे उन्हें भोजन पचाने में परेशानी होती है।

इसलिए नेचुरल प्रोबायोटिक देना सही रहता है। ये ताज़ा होना चाहिए।

4. स्ट्रीट फूड तो हरगिज नहीं:–

स्ट्रीट फूड स्वाद में भले ही लजीज़ हों, पर हाजीन के हिसाब से अच्छे नहीं होते। इसलिए बच्चे जब भी स्ट्रीट फूड खाते हैं, अक्सर उन्हें दस्त आदि की परेशानी हो जाती है। दरअसल, इन्फेक्टेड खाने की वजह से बाहरी हानिकारक बैक्टीरिया शरीर में पहुंच जाते हैं। ये गुड बैक्टीरिया की संख्या को कम कर देते हैं। ऐसा अनुमान है कि करीब 4 ट्रिलियन गुड बैक्टीरिया की मौजूदगी शरीर में होती है।

5. ऐंटीबायोटिक अपनी मर्जी से नहीं:–

इसकी वजह से पैदा हुई परेशानी बच्चों में काफी देखी जाती है। एक वयस्क की तुलना में बच्चों का डाइजेस्टिव सिस्टम कमजोर होता है। ऐसे में बिना ज़रूरत, डॉक्टर से बिना पूछे कई पैरंट्स बच्चों के बीमार पड़ने पर ऐंटीबायोटिक देते हैं। इस वजह से गुड बैक्टीरिया या गुड फ़्लोरा की संख्या ज़्यादा कम होने लगती है।

❖❖❖

पृष्ठ .....31...का शेष

(6) नहर खुदवाई।

(7) कोई और काम किया, उसमें अपनी रक़म लगाई, तो जब तक इन चीज़ों से फ़ायदा उठाया जाता रहेगा, उसके नाम–ए– आमाल में सवाब लिखा जाता रहेगा। (तरग़ीब)

जायज़ मक़सद के लिये माल कमाना इबादत है:–

कअब बिन उजरह(रजि.अ.). कहते हैं कि हुज़ूर अक़दस(स0अ0व0). के पास से एक आदमी गुजरा जो मेहनत मज़दूरी के लिये जा रहा था आप(स0अ0व0) के पास बैठे हुए लोगों ने उसकी मेहनत और सरगर्मी को देख कर कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल(स0अ0व0) अगर इसकी दिलचस्पी और सरगर्मी अल्लाह की राह में होती तो कितना अच्छा होता. आप(स.अ.व.) ने फ़रमाया अगर वह अपने बच्चों की परवरिश के लिये दौड़–धूप कर रहा है और अगर अपने बूढ़े वालदैन की परवरिश के लिये दौड़–धूप कर रहा है, और अगर खुद के लिये ऐसा कर रहा है और मक़सद यह है कि किसी के आगे हाथ न फैलाना पड़े तो यह सब अल्लाह की राह में शुमार होगा।

(अलमंज़री ब–हवाला तबरानी)

oooOooo

पृष्ठ .....38...का शेष

ज़रूरत इस बात की है कि संपूर्ण विश्व को बिना किसी धर्म जाति, भेदभाव के इस मानव नरसंहार को रोकने की पूरी कोशिश करनी चाहिए। मानव जाति हमेशा से प्राकृतिक रूप से शांति चाहती है लेकिन हर युग में ऐसे अत्याचारी पैदा होते रहे जो अपने स्वार्थ, अहंकार, शक्ति और ग़लत अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए ये समझते रहे कि एक दूसरे को रौंद कर ही सत्ता प्राप्त हो सकती है। लेकिन कब तक ऐसे ही मानवजाति लड़ती झगड़ती और ख़ून बहाती रहेगी, आखिर कब तक शक्ति, सत्ता और धर्म का नशा लोगों का रक्तपात कराता रहेगा। आखिर कब उम्मीद की किरण निकलेगी और शांति प्रेम का वातावरण बनेगा। आज हमें हक़ीक़त को समझने की ज़रूरत है ऐसे साधन अपनाएं जिनसे सत्य हम तक पहुंचे और हम दुनिया के छलावे को पहचान कर सत्य को उजागर करें।

फतह का जशन या हार का सोग।
ज़िन्दगी मय्यतों पे रोती है।।
टैंक आगे बढ़े की पीछे हटें।
कोख धरती की बाँझ होती है।।

(लेखकः भाषा एवं पत्रकारिता विभाग दारुल उलूम नदवतुल उलमा के छात्र हैं)।

❖❖❖

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

अबू मोहम्मद आमिर नदवी

WHO के अनुसार गाज़ा में हर दिन 150 बच्चों की मौत:-

विश्व स्वास्थ्य संगठन *WHO* ने कहा कि 7 अक्तूबर को भड़के इज़्राइल–हमास संघर्ष में 10 हज़ार से अधिक लोग, यानी कुल आबादी का लगभग 0.5 प्रतिशत, मारे गये हैं। अनुमान है कि औसतन 160 बच्चे हर दिन मर रहे हैं। समाचार एजेंसी शिन्हुआ ने यहां एक प्रेस ब्रीफिंग में विश्व निकाय के प्रवक्ता क्रिश्चियन लिंडरमियर के हवाले से कहा कि अब तक 16 स्वास्थ्य कर्मी डयूटी पर मारे गये हैं उन्होंने कहा, फिलहाल ईंधन की कमी या क्षति के कारण गाजा में 14 अस्पताल काम नहीं कर रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा कि गाजा में कुछ डॉक्टर बिना एनेस्थीसिया के ऑप्रेशन कर रहे हैं। लिंडरमियर ने कहा, ''गाजा में नागरिकों द्वारा सहे जा रहे आतंक को किसी भी तरह से उचित नहीं ठहराया जा सकता है।'' *WHO* के प्रवक्ता ने प्रतिदिन लगभग 500 ट्रकों की सहायता के लिए संयुक्त राष्ट्र से आह्वान किया है उन्होंने कहा कि मृत्यु और पीड़ा का स्तर ''समझना कठिन'' है।

मैदान में फलस्तीनी समर्थक:-

क्रिकेट वर्डकप फाइनल में भारतीय पारी का चौदहवां ओवर चल रहा था। क्रीज पर विराट कोहली और केएल राहुल थे। तब भारत का स्कोर तीन विकेट पर 93 रन था। स्पिनर एडम जापा की गेंद पर कोहली ने एक सिंगल लिया ही था कि स्क्वॉयर बाउंड्री के पास घेरे को कूद कर लाल पैंट और सफेद कमीज़ में एक दर्शक मैदान पर घुस आया। उसने फलस्तीन के झंडे के रंगों वाला मास्क पहन रखा था। जब तक सुरक्षाकर्मी उसको काबू में ले पाते वह पिच तक पहँच गया। विराट को गले लगा लिया। विराट सहज भाव से खड़े रहे और फिर उन्होंने उसे वापस जाने के लिए इशारा किया। बाद में पता लगा कि यह शख्स वेन जॉनसन हैं यह चीनी– फिलिपिनी मूल का ऑस्ट्रेलियन वेन जॉनसन है।

सुरक्षाकर्मी घेर कर उसे मैदान से बाहर ले गये। घुंघराले बालों वाले इस जुनूनी फैन ने अपनी सफेद कमीज़ पर आगे पीछे **''स्टॉप बॉम्बिंग पेलेस्टाइन'** लिख रखा था। पीछे की तरफ बड़े अक्षरों में **'फ्री पेलेस्टाइन'** लिखा था। उसे स्थानीय पुलिस के हवाले कर दिया गया। पुलिस उसे अरेस्ट करके पूछताछ के लिए ले गई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आगमन को देखते हुए सुरक्षा के कड़े बंदोबस्त के बीच यह घटना चौकाने वाली थी।

विश्व इंटरनेट महासभा 2023:-

चीनी राष्ट्रपति शी चिनफिंग ने 8 नवम्बर की सुबह दक्षिण पूर्वी चीन के चच्यांग प्रांत के वुचन शहर में आयोजित विश्व इंटरनेट महासभा 2023 के उद्घाटन समारोह में एक वीडियो भाषण दिया। अपने भाषण के दौरान, शी चिनफिंग ने वैश्विक इंटरनेट विकास प्रशासन के महत्व और साइबरस्पेस में साझा नीति वाले समुदाय के निर्माण की आवश्यकता पर ज़ोर दिया। उन्होंने कहा कि साइबरस्पेस में साझा भविष्य वाले समुदाय का निर्माण न केवल हमारे युग के लिए एक विकल्प है बल्कि अंतर्राष्ट्रीय समुदाय की सामूहिक आकांक्षा भी है। राष्ट्रपति शी चिनफिंग ने अधिक समावेशी और समृद्ध साइबरस्पेस बनाने के लिए विकास को प्राथमिकता देने की वकालत की। उन्होंने अधिक शांतिपूर्ण और सुरक्षित ऑनलाइन वातावरण को बढ़ावा देने के लिए सुख और दुख दोनों को साझा करने के महत्व पर भी ज़ोर दिया। इसके अलावा, उन्होंने अधिक समान और समावेशी साइबरस्पेस को बढ़ावा देने के लिए सभ्यताओं के बीच आपसी सीख के महत्व पर प्रकाश डाला।

आइसलैंड में 24 घंटों में 1400 भूकंप के झटके, लगी इमरजेंसी:-

यूरोपीय देश आइसलैंड में 24 घंटे के अंदर 1400 बार भूकंप के झटके महसूस किये गये। इसके बाद देश में इमरजेंसी लगा दी गई। ज्वालामुखी के फटने की आशंका और भूकंप के बीच राजधानी रेक्याविक के पास के शहर को पूरी तरह खाली करा दिया गया है।

आइसलैंड के सिविल प्रोटकशन और इमरजेंसी मैनेजमेंट डिपार्टमेंट ने एक बयान में नागरिकों को चेतावनी देते हुए कहा, 'ऐसी आशंका है कि इससे भी तगड़े भूकंप के झटके लग सकते हैं और बड़ी तबाही का सबब बन सकते हैं। इसलिए सबको सावधान रहने की ज़रूरत है। भूकंप इतना तेज था कि कई घरों की खिड़की तक दरक गईं और सड़कों में दरार आ गई। अधिकारियों ने बताया कि आइसलैंड में 33 सक्रिय जवालामुखी हैं, जो यूरोप में सबसे अधिक हैं।

❖❖❖

नदवतुल उलमा
पोस्ट बाक्स न0 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)

ندوۃ العلماء
پوسٹ بکس ۹۳ - ٹیگور مارگ
لکھنؤ ۲۲۶۰۰۷ (الہند)

दिनांक 01/11/2023 ____________ تاریخ

स्टॉफ़ क्वाटर्स की तामीर के लिए अपील

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि दारुल उलूम नदवतुल उलमा हज़रत मौलाना सैय्यद बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी दामत बरकातुहुम, नाज़िम नदवतुल उलमा की सरपरस्ती में अपनी इल्मी व दीनी, तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंज़ाम दे रहा है, दारुल उलूम और उसकी ब्रांचों में इल्मी तालीमी सिलसिला बराबर जारी है, टीचर्स व स्टॉफ अपनी ज़िम्मेदारियों को अंजाम दे रहे हैं, टीचर्स व स्टॉफ की अधिकता की वजह से दारुलउलूम में उनके रहने की गुंजाइश नहीं रही तो दारुलउलूम के मेन कैम्पस के अलावा माहद सिकरौरी में स्टॉफ क्वाटर्स और माहद के करीब नदवा कालोनी की तीन मंज़िला बिल्डिंग तामीर हुई, मगर अब भी स्टॉफ के लिए क्वाटर्स की कमी बहुत ज़ियादा महसूस की जा रही है, इस सूरते हाल की वजह से नदवा मेन कैम्पस से करीब मुहल्ला मकारिम नगर में कुछ और स्टॉफ क्वाटर्स बनाने का फैसला किया गया है, और अल्लाह तआ़ला की मदद के भरोसे पर यह तामीर शुरु कर दी गयी है।

नये स्टॉफ क्वाटर्स की यह बिल्डिंग तीन मंजिला होगी, जिसमें 9 फेमली क्वाटर्स होंगे, इसकी तामीर पर 1,15,00000/— (एक करोड़ पंद्रह लाख) रूपये के खर्च का अंदाज़ा है, जो इंशाअल्लाह अहले खैर हज़रात के सहयोग से पूरा होगा।

हम उम्मीद करते हैं कि आप इस अहम ज़रूरत की ओर फौरन तवज्जोह फरमायेंगे और नदवतुल उलमा के कारकुनों का हाथ बटायेंगे।

मौलाना जाफर मसऊद हसनी नदवी
नाजिरे आ़म नदवतुल उलमा

डॉ0 मुहम्मद असलम सिद्दीक़ी
मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) तक़ीउद्दीन नदवी
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
मोहतमिम नदवतुल उलमा

नोटः चेक/ड्राफ्ट पर केवल यह लिखेंः
NADWATUL ULAMA
और इस पते पर भेजेंः
NAZIM NADWATUL ULAMA
Nizamat Office, Nadwatul Ulama.
Tagore Marg, Lucknow-226007 (UP)

बरा—ए—करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए नं0 **8736833376** पर इत्तिला ज़रूर करें।

नदवतुल उलमा
STATE BANK OF INDIA MAIN BRANCH, LUCKNOW
(IFSC: SBIN0000125)
—ःतअ़मीरः—
A/C No. 10863759733

नोटः नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को **Section 80G income Tax act 1961** के तहत छूट प्राप्त होगी।
Online Donation Link: https://www.nadwa.in.donation/ Website: www.madwa.in, Email: nizamat@nadwa.in

RNI No. UPHIN/2002/07945
Regd. No. SSP/LW/NP-491/2021 To 2023
Dispatch Date :1 & 5
Published of 27th Advance Month
Dispatch: R.M.S Charbagh, Lucknow

MONTHLY
SACHCHA RAHI
Vol. 22 - Issue 10

Office Timing : 7:30 AM To 1:15PM
Tel.:(0522) 2740406
ISSN No. : 2582-4007
http://sachcha-rahi.nadwa.in
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com

RK JEWELLERS
Renowned Name in Jewellery

Haji Abdul Rauf Khan
Haji Mohd. Faheem Khan
Mohd. Owais Khan

Shop : Sarai Bans, Akbari Gate,
Chowk, Lucknow - 226003
Ph.: 0522-2267910
+91-9415108039

R.K. Clinic Research CENTRE

R. K. CLINIC
& RESEARCH CENTRE
Dr. Mohammad Fahad Khan
M.D.
विशेषज्ञ
पेट एवं उदर रोग, श्वास एवं चेस्ट रोग, एण्ड्रोक्रायोनोलोजी एवं मधुमेह रोग
24 HOURS EMERGENCY SERVICES AVAILABLE
G-1, Aman Apartments, Chaupatiyan, Opp. Power House, Lucknow
Ph.: 0522-2651950, 9415006983

Printed & Published by Mohammad Taha Athar, Tagore Marg, Badshah Bagh, Lukcnow - 7
on behalf of Majlis-e-Sahafat-wa-Nashriyat at Kakori Offset Press, BN Varma Road, Lucknow - 3